वक्तव्य

हिन्दी की जनपदी बोलियों का परिचय प्राप्त कराने के लिये हिन्दी में कोई भी उपयुक्त पुस्तक नहीं है। ग्रियर्सन द्वारा संपादित 'भारतीय भाषा सर्वे' की जिल्दों में इस तरह की प्रचुर सामग्री संगृहीत है किन्तु ये जिल्दें सर्वसाधारण के लिये सुलभ नहीं हैं। इसी त्रुटि को दूर करने के निमित्त प्रस्तुत संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पुस्तक की भूमिका की सामग्री तथा अधिकांश बोलियों के उदाहरण 'भारतीय भाषा सर्वे' से लिये गये हैं। 'भारतीय भाषा सर्वे' की जिल्दों से बोलियों के उदाहरण उद्धृत करने की अनुमति देने के लिये मैं भारत सरकार का आभारी हूँ। शेष उदाहरण एकत्रित करने में मुझे अपने शिष्यों, मित्रों, तथा हिन्दी उर्दू विद्वानों की कुछ प्रकाशित पुस्तकों से सहायता मिली है अतः ये सब धन्यवाद के पात्र हैं। इन सब के नामों का उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है। जिन उदाहरणों में नामों का उल्लेख नहीं है वे 'भाषासर्वे' से लिये गये हैं।

परिचय में हिन्दी भाषा तथा उसकी बोलियों का संक्षिप्त वर्णन है। उसके बाद ग्रामीण हिन्दी के उदाहरण दिये गये हैं। तदनन्तर साहित्यिक खड़ी बोली के भिन्न-भिन्न रूपों के उदाहरण हैं। परिशिष्ट में हिन्दी की मुख्य-मुख्य बोलियों के व्याकरणों की तालिकायें दी गई हैं। इनसे बोलियों के भेदों को समझने में सहायता मिल सकेगी। विश्वास है प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी के अनेक रूपों का ठीक ठीक बोध कराने में सहायक होगी।

अधिकांश ग्रामीण उदाहरण रोचक कहानियों के रूप में हैं अतः भाषा संबंधी ज्ञान के साथ साथ पुस्तक से साहित्यिक आनन्द भी प्राप्त हो सकेगा। पुस्तक के आरंभ में एक मानचित्र भी दिया गया है। इससे भिन्न भिन्न बोलियों के क्षेत्रों को समझने में विशेष सहायता मिलेगी।

जनवरी १९५०
विश्वविद्यालय, प्रयाग

धीरेन्द्र वर्मा

विषय-सूची

परिचय

परिचय

क—हिन्दी भाषा

संस्कृत की स ध्वनि फ़ारसी में ह के रूप में पायी जाती है अतः संस्कृत के 'सिंधु' और 'सिंधी' शब्दों के फ़ारसी रूप 'हिंद' और 'हिंदी' हो जाते हैं। प्रयोग तथा रूप की दृष्टि से 'हिंदवी' या 'हिन्दी' शब्द फ़ारसी भाषा का ही है। संस्कृत अथवा आधुनिक भारतीय भाषाओं के किसी भी प्राचीन ग्रंथ में इसका व्यवहार नहीं किया गया है। फ़ारसी में 'हिंदी' का शब्दार्थ 'हिंद से सम्बन्ध रखनेवाला' है किन्तु इसका प्रयोग 'हिंद के रहनेवाले' तथा 'हिंद की भाषा' के अर्थ में होता रहा है। 'हिंदी' शब्द के अतिरिक्त 'हिंदू' शब्द भी फ़ारसी से ही आया है। फ़ारसी में 'हिंदू' शब्द का व्यवहार 'इस्लाम धर्म्म के न माननेवाले हिन्द-वासी' के अर्थ में प्रायः मिलता है। इसी अर्थ में यह शब्द भी अपने देश में प्रचलित हो गया है।

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

शब्दार्थ की दृष्टि से 'हिंदी' शब्द का प्रयोग हिंद अर्थात् भारत में बोले जाने वाली किसी भी आर्य, द्राविड़ अथवा अन्य कुल की भाषा के लिए हो सकता है किन्तु आजकल वास्तव में इसका व्यवहार उत्तरभारत के मध्यभाग के हिन्दुओं की वर्त्तमान साहित्यिक भाषा के अर्थ में मुख्यतया तथा वर्त्तमान साहित्यिक भाषा के साथ साथ इस भूमिभाग की समस्त बोलियों और उनसे संबंध रखने वाले प्राचीन साहित्यिक रूपों के लिए साधारणतया होता है। इस भूमिभाग की सीमायें पश्चिम में जैसलमीर, उत्तर पश्चिम में

हिन्दी भाषा का प्रचलित अर्थ तथा प्रभाव का क्षेत्र

अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी छोर तक के पहाड़ी प्रदेश का दक्षिणी भाग, पूरब में भागलपुर, दक्षिण पूरब में रायपुर तथा दक्षिण पश्चिम में खँडवा तक पहुँचती हैं। इस भूमिभाग में हिन्दुओं के आधुनिक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं तथा शिष्ट बोल-चाल और शिक्षा की भाषा एक है। साधारणतया 'हिंदी' शब्द को प्रयोग जनता में इसी साहित्यिक खड़ीबोली हिन्दी भाषा के अर्थ में किया जाता है किंतु साथ ही इस भूमिभाग की ग्रामीण बोलियों जैसे मारवाड़ी, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, मैथिली आदि को तथा प्राचीन ब्रज, अवधी आदि साहित्यिक भाषाओं को भी हिंदी भाषा के ही अंतर्गत माना जाता है। 'हिंदी' शब्द का यह प्रचलित अर्थ है। इस प्रकार से हिन्दी को साहित्यिक भाषा मानने वाले प्रदेश की जनसंख्या लगभग १२ करोड़ है।

भाषा-शास्त्र की दृष्टि से हिन्दी भाषा का अर्थ तथा क्षेत्र

भाषा-शास्त्र की दृष्टि से ऊपर दिये हुए भूमिभाग में पाँच उप-भाषाएँ मानी जाती हैं। राजस्थान की बोलियों के समुदाय को 'राजस्थानी उपभाषा' के नाम से पृथक् भाषा माना गया है। बिहार में मिथिला और पटना-गया की बोलियों तथा उत्तरप्रदेश में बनारस-गोरखपुर कमिश्नरियों की बोलियों के समूह को एक भिन्न 'बिहारी उपभाषा' माना जाता है। उत्तर के पहाड़ी प्रदेशों की बोलियाँ 'पहाड़ी उपभाषा' के नाम से पृथक् मानी जाती हैं। शेष मध्य के भूमिभाग में हिंदी के दो उपरूप माने जाते हैं जो 'पश्चिमी और पूर्वी उपभाषा' के नाम से पुकारे जाते हैं। भाषा-शास्त्र से संबंध रखने वाले ग्रंथों में 'हिंदी भाषा' शब्द का प्रयोग कभी कभी इसी मध्य के भूमिभाग की बोलियों तथा उनकी आधारभूत साहित्यिक भाषाओं के अर्थ में होता है। कुछ लोग पंजाबी को भी हिंदी की एक उपभाषा मानते हैं।

हिंदी शब्द के शब्दार्थ, प्रचलित अर्थ, तथा शास्त्रीय अर्थ के भेद को 'हिंदीभाषा' के प्रत्येक विद्यार्थी को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए।

ख—खड़ीबोली हिन्दी के साहित्यिक रूपान्तर—हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी

इस पुस्तक में खड़ीबोली शब्द का प्रयोग मेरठ-बिजनौर के आस-पास बोली जाने वाली गाँव की भाषा के अर्थ में किया गया है। भाषा सर्वे में ग्रियर्सन महोदय ने इस बोली को 'वर्नाक्युलर हिन्दुस्तानी' नाम दिया है किन्तु खड़ीबोली नाम अधिक अच्छा है। कभी कभी ब्रजभाषा तथा अवधी आदि प्राचीन साहित्यिक भाषाओं से भेद करने के लिए आधुनिक साहित्यिक हिन्दी को भी खड़ीबोली नाम से पुकारा जाता है।[१] साहित्यिक अर्थ में प्रयुक्त खड़ीबोली शब्द तथा भाषाशास्त्र की दृष्टि से प्रयुक्त खड़ीबोली शब्द के इस भेद को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। ब्रजभाषा की अपेक्षा यह बोली वास्तव में कुछ खड़ी-खड़ी लगती है कदाचित् इसी कारण इसका नाम खड़ीबोली पड़ा। साहित्यिक हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी इन तीनों रूपों का संबंध इस खड़ीबोली से ही है।

खड़ीबोली हिन्दी

---

[१] इस अर्थ में खड़ीबोली का सब से प्रथम प्रयोग लल्लूजी लाल ने प्रेमसागर की भूमिका में किया है। लल्लूजी लाल के ये वाक्य खड़ीबोली शब्द के व्यवहार पर बहुत कुछ प्रकाश डालते हैं अतः ज्यों के त्यों नीचे उद्धृत किये जाते हैं। आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के आदि रूप का भी यह उद्धरण अच्छा नमूना है। लल्लूजी लाल लिखते हैं:—"एक समैं व्यासदेव कृत श्रीमत भागवत के दशमस्कंध की कथा को चतुर्भुज मिश्र ने दोहे चौपाई में ब्रजभाषा किया। सो पाठशाला के लिये श्री महाराजाधिराज, सकल गुणनिधान, पुण्यवान महाजान मारकुइस वलिजलि गवरनर जनरल प्रतापी के राज में और श्रीयुत गुनगाहक, गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय की आज्ञा से सम्वत १८६० में श्री लल्लूजी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वाले

आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के उस दूसरे साहित्यिक रूप का नाम उर्दू है जिसका व्यवहार उत्तर भारत के शिक्षित मुसलमानों तथा उनसे अधिक संपर्क में आनेवाले कुछ हिन्दुओं जैसे, पंजाबी, देसी काश्मीरी तथा पुराने कायस्थों आदि में पाया जाता है। भाषा की दृष्टि से इन दोनों साहित्यिक भाषाओं में विशेष अंतर नहीं है, वास्तव में दोनों का मूलाधार मेरठ-बिजनौर की खड़ीबोली है। अतः जन्म से उर्दू और आधुनिक साहित्यिक हिन्दी सगी बहिनें हैं। विकसित होने पर इन दोनों में जो अंतर हुआ उसे रूपक में यों कह सकते हैं कि एक तो हिन्दुआनी बनी रही और दूसरी ने मुसल्मान धर्म ग्रहण कर लिया। साहित्यिक वातावरण, शब्द-समूह, तथा लिपि में हिन्दी और उर्दू में आकाश पाताल का भेद है। साहित्यिक हिन्दी इन सब बातों के लिए भारत की प्राचीन संस्कृति तथा उसके वर्तमान रूप की ओर देखती है; भारत के वातावरण में उत्पन्न होने और पलने पर भी उर्दू शैली फ़ारस और अरब की सभ्यता और साहित्य से जीवन-श्वास ग्रहण करती है।

आधुनिक साहित्यिक हिन्दी और उर्दू में साम्य तथा भेद

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक साहित्यिक हिन्दी की अपेक्षा साहित्यिक उर्दू का जन्म पहले हुआ था। भारतवर्ष में आने पर बहुत दिनों तक मुसल्मानों का केन्द्र दिल्ली रहा अतः फ़ारसी, तुर्की और अरबी बोलनेवाले मुसल्मानों ने जनता से बात-चीत और व्यवहार करने के लिए धीरे-धीरे दिल्ली के आस-पास की बोली सीखी। इस देशी बोली में अपने विदेशी शब्दसमूह को स्वतन्त्रता-पूर्वक मिला लेना इनके लिए स्वाभाविक था। इस प्रकार की बोली का व्यवहार सब से प्रथम "उर्दू-ए-मुअल्ला" अर्थात् दिल्ली के महलों के बाहर 'शाही फ़ौजी

उर्दू भाषा का जन्म तथा विकास

ने विस का सार ले यामनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ीबोली में कह नाम प्रेम-सागर धरा।"

बाजारों' में होता था अतः इसी से दिल्ली के पड़ोस की बोली के इस विदेशी शब्दों से मिश्रित रूप का नाम 'उर्दू' पड़ा। 'उर्दू' शब्द का अर्थ बाजार है। वास्तव में आरम्भ में उर्दू बाजारू भाषा थी। शाही दरबार से संपर्क में आनेवाले हिन्दुओं का इसे अपनाना स्वाभाविक था, क्योंकि फ़ारसी-अरबी शब्दों से मिश्रित किन्तु अपने देश की एक बोली में इन भिन्न भाषा-भाषी विदेशियों से बातचीत करने में इन्हें सुविधा रहती होगी। जैसे भारतीय भाषायें बोलनेवाले लोग ईसाई-धर्म ग्रहण कर लेने पर अंग्रेज़ी से अधिक प्रभावित होने लगते हैं उसी तरह मुसल्मान धर्म ग्रहण कर लेनेवाले हिन्दुओं में भी अरबी फ़ारसी के बाद उर्दू का विशेष आदर होना स्वाभाविक था। धीरे-धीरे यह उत्तर भारत की मुसल्मान जनता की विशेष भाषा हो गई। शासकों द्वारा अपनाये जाने के कारण यह उत्तर भारत के समस्त शिष्ट समुदाय की भाषा मानी जाने लगी। जिस तरह आजकल पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी के मुँह से 'मुझे चांस (Chance) नहीं मिला' निकलता है, उसी तरह उस समय 'मुझे मौक़ा नहीं मिला' निकला होगा। जनता इसी को 'मुझे औसर नहीं मिला' कहती होगी और अब भी कहती है। बोलचाल की उर्दू का जन्म तथा प्रचार कदाचित् इसी प्रकार हुआ।

एक अंग्रेज विद्वान ग्रैहम बेली महोदय ने उर्दू की उत्पत्ति के संबंध में एक नया विचार रक्खा है। उनकी समझ में उर्दू की उत्पत्ति दिल्ली में खड़ीबोली के आधार पर नहीं हुई बल्कि इससे पहले ही पंजाबी के आधार पर यह लाहौर के आस-पास बन चुकी थी और दिल्ली में आने पर मुसलमान शासक इसे अपने साथ ही लाये थे। खड़ीबोली के प्रभाव से इसमें बाद को कुछ परिवर्तन अवश्य हुए किन्तु इसका मूलाधार पंजाबी भाषा को मानना चाहिए, खड़ीबोली को नहीं। इस संबंध में बेली महोदय का सब से बड़ा तर्क यह है कि दिल्ली को शासन केन्द्र बनाने के पूर्व १००० से १२०० ईसवी तक लगभग दो सौ वर्ष मुसल्मान पंजाब में रहे। उस समय वहाँ की जनता से संपर्क में आने के

लिए इन्होंने कोई न कोई भाषा अवश्य सीखी होगी और यह तत्कालीन पंजाबी ही हो सकती है। यह स्वाभाविक है कि भारत में आगे बढ़ने पर वे इसी भाषा का प्रयोग करते रहे हों। जो हो, बिना पूर्ण खोज के उर्दू की उत्पत्ति के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इस समय सर्वसम्मत मत यही है कि मेरठ-बिजनौर की खड़ीबोली उर्दू तथा आधुनिक साहित्यिक हिन्दी दोनों ही की मूलाधार है।

उर्दू का साहित्य में प्रयोग

उर्दू का साहित्य में प्रयोग दक्षिण हैदराबाद के मुसल्मानी दरबार से प्रारम्भ हुआ। उस समय तक दिल्ली-आगरा के दरबार में साहित्यिक भाषा का स्थान फ़ारसी को मिला हुआ था। साधारण जनसमुदाय की भाषा होने के कारण अपने घर में उर्दू हेय समझी जाती थी। हैदराबाद रियासत की जनता की भाषायें भिन्न द्राविड़ वंश की थीं अतः उनके बीच में यह मुसल्मानी आर्य्यभाषा, शासकों की भाषा होने के कारण, विशेष गौरव की दृष्टि से देखी जाने लगी इसीलिए इसका साहित्य में प्रयोग करना बुरा नहीं समझा गया। औरङ्गाबादी महाकवि वली उर्दू साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। वली के क़दमों पर ही मुग़ल-काल के उत्तरार्द्ध में दिल्ली में और उसके बाद लखनऊ के मुसल्मानी दरबार में भी उर्दू भाषा में कविता करने वाले कवियों का एक समुदाय बन गया जिसने इस बाज़ारू बोली को साहित्यिक भाषा के सिंहासन पर आसीन कर दिया। फ़ारसी शब्दों के अधिक मिश्रण के कारण कविता में प्रयुक्त उर्दू को 'रेख़्ता' ('मिश्रित') कहते थे। स्त्रियों की भाषा 'रेख़्ती' कहलाती थी। दक्षिणी मुसल्मानों की भाषा 'दक्खिनी' उर्दू कहलाई। इसमें फ़ारसी शब्द कम प्रयुक्त होते थे और उत्तरभारत की उर्दू की अपेक्षा यह कम परिमार्जित थी। ये सब उर्दू के रूप रूपान्तर हैं। उर्दू भाषा का गद्य में व्यवहार, हिन्दी भाषा के गद्य के समान, अंग्रेज़ों के शासन काल में प्रारम्भ हुआ। मुद्रणकला के साथ इसका प्रचार भी अधिक बढ़ा। उर्दू भाषा अरबी-फ़ारसी अक्षरों में लिखी जाती है। पंजाब तथा

उत्तर प्रदेश में कचहरी, तहसील और गाँव में उर्दू में ही सरकारी कागज़ लिखे जाते थे अतः नौकर पेशा हिन्दुओं के लिए भी इसकी जानकारी रखना अनिवार्य था। आगरा-दिल्ली की तरफ़ के हिन्दुओं में इसका अधिक प्रचार होना स्वाभाविक था। पंजाबी भाषा में विशेष साहित्य न होने के कारण पंजाबी लोगों ने तो इसे साहित्यिक भाषा की तरह अपना रक्खा था। हिंदी-भाषी प्रदेश में हिंदुओं के बीच उर्दू का प्रभाव दिन दिन कम हो रहा है।

हिन्दुस्तानी

'हिन्दुस्तानी' नाम यूरोपीय लोगों का दिया हुआ है। आधुनिक साहित्यिक हिन्दी या उर्दू का बोल-चाल का रूप 'हिन्दुस्तानी' कहलाता है। केवल बोल-चाल में प्रयुक्त होने के कारण इसमें फ़ारसी अथवा संस्कृत शब्दों की भरमार नहीं रहती यद्यपि इसका झुकाव उर्दू की तरफ अधिक रहता है। कदाचित् यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि हिन्दुस्तानी उत्तर भारत के पढ़े लिखे लोगों की बोल-चाल की उर्दू है। उत्पत्ति की दृष्टि से आधुनिक साहित्यिक हिंदी तथा उर्दू के समान ही इसका आधार भी खड़ी बोली है। एक तरह से यह हिन्दी-उर्दू की अपेक्षा खड़ीबोली के अधिक निकट है क्योंकि शब्द-समूह में यह फ़ारसी-संस्कृत के अस्वाभाविक प्रभाव से बहुत कुछ मुक्त है। दक्षिण के ठेठ द्राविड़ प्रदेशों को छोड़ कर शेष समस्त उत्तर भारत में हिन्दी-उर्दू का यह व्यावहारिक रूप हर जगह समझ लिया जाता है। कलकत्ता, हैदराबाद, बंबई, करांची, जोधपुर, पेशावर, नागपुर, काश्मीर, लाहौर, दिल्ली, लखनऊ, बनारस, पटना आदि सब जगह हिन्दुस्तानी बोली से काम निकल सकता है। अंतिम चार पाँच स्थान तो इसके घर ही हैं।

साधारण श्रेणी के लोगों के लिए लिखे गये साहित्य में हिन्दुस्तानी का ही प्रयोग पाया जाता है। क़िस्से, ग़ज़लों और भजनों आदि की बाज़ारू किताबें हिन्दुस्तानी में ही मिलेंगी। अक्सर ऐसी किताबें जो जनसमुदाय को प्रिय हो जाती हैं फ़ारसी और देव-

नागरी दोनों लिपियों में छापी जाती हैं। इस ठेठ भाषा में कुछ साहित्यिक पुरुषों ने भी लिखने का प्रयास किया है। इंशा की 'रानी केतकी की कहानी' तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय की 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'बोलचाल' हिन्दुस्तानी को साहित्यिक भाषा बनाने के प्रयोग हैं जिसमें ये सज्जन सफल नहीं हो सके।

ग—हिन्दी की ग्रामीण बोलियाँ

पश्चिमी तथा पूर्वी उपभाषाएँ

प्राचीन 'मध्यदेश' की आठ मुख्य बोलियों के समुदाय को भाषाशास्त्र की दृष्टि से पश्चिमी तथा पूर्वी उपभाषा के नाम से पुकारा जाता है। इनमें से १—खड़ीबोली, २—बाँगरू, ३—ब्रज, ४—कनौजी तथा ५—बुंदेली इन पांच को भाषासर्वे में 'पश्चिमी' नाम दिया गया है तथा १—अवधी, २—बघेली तथा ३—छत्तीसगढ़ी इन शेष तीन को 'पूर्वी' नाम से पुकारा गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से पश्चिमी का सम्बन्ध शौरसेनी प्राकृत से तथा पूर्वी का सम्बन्ध अर्द्ध मागधी प्राकृत से जोड़ा जाता है। भाषासर्वे के आधार पर इन आठों बोलियों का संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है।

खड़ीबोली पश्चिम रोहिलखंड, गंगा के उत्तरी दोआब तथा अम्बाला ज़िले की बोली है। खड़ीबोली तथा हिन्दी उर्दू आदि का संबंध ऊपर बतलाया जा चुका है। मुसल्मानी प्रभाव के निकटतम होने के कारण ग्रामीण खड़ीबोली में भी फ़ारसी-अरबी के शब्दों का व्यवहार अन्य बोलियों की अपेक्षा अधिक है किन्तु ये प्रायः अर्धतत्सम अथवा तद्भव रूपों में प्रयुक्त किये जाते हैं। इन्हीं को तत्सम रूप में प्रयुक्त करने से खड़ीबोली में उर्दू की झलक आने लगती है। खड़ीबोली निम्नलिखित स्थानों में गाँवों की बोली है:—

खड़ीबोली

रामपुर राज्य, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुज़फ़्फ़रनगर,

सहारनपुर, देहरादून के मैदानी भाग, अम्बाला, तथा कलसिया और पटियाला रियासत के पूर्वी भाग।

खड़ीबोली बोलने वालों की संख्या ५३ लाख के लगभग है। इस संबंध में निम्नलिखित यूरोपीय देशों की जनसंख्या के अङ्क रोचक प्रतीत होंगे :—ग्रीस ५४ लाख, बलगेरिया ४६ लाख तथा तीन भाषायें बोलने वाला स्विटजरलैंड ३६ लाख।

बाँगरू

बाँगरू बोली जाटू या हरियानी नाम से भी प्रसिद्ध है। यह दिल्ली, कर्नाल, रोहतक और हिसार ज़िलों और पड़ोस के पटियाला, नाभा और झींद रियासतों के गाँवों में बोली जाती है। एक प्रकार से यह पंजाबी और राजस्थानी मिश्रित खड़ीबोली है। बाँगरू बोलने वालों की संख्या लगभग २२ लाख है। बाँगरू बोली की पश्चिमी सीमा पर सरस्वती नदी बहती है। हिन्दी भाषी प्रदेश के प्रसिद्ध युद्धक्षेत्र पानीपत तथा कुरुक्षेत्र इसी बोली की सीमा के अंतर्गत पड़ते हैं अतः इसे हिन्दी की सरहदी बोली मानना अनुचित न होगा।

व्रजभाषा

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में व्रज की बोली की गिनती साहित्यिक भाषाओं में होने लगी थी इसीलिए आदरार्थ यह व्रजभाषा कह कर पुकारी जाने लगी। विशुद्ध रूप में यह बोली अब भी मथुरा, आगरा, अलीगढ़ तथा धौलपुर में बोली जाती है। गुड़गाँव, भरतपुर, करौली तथा ग्वालियर के पश्चिमोत्तर भाग में व्रजभाषा में राजस्थानी और बुंदेली की कुछ-कुछ झलक आने लगती है। बुलंदशहर, बदायूँ और नैनीताल तराई में खड़ीबोली का कुछ प्रभाव शुरू हो जाता है तथा एटा, मैनपुरी और बरेली जिलों में कुछ कनौजीपन आने लगता है। वास्तव में पीलीभीत तथा इटावा की बोली भी कनौजी की अपेक्षा व्रजभाषा के अधिक निकट है। व्रजभाषा बोलने वालों की संख्या लगभग ७६ लाख है।

तुलना के लिये नीचे लिखे देशों की जनसंख्याओं के अङ्क रोचक प्रतीत होंगेः—टर्की ८० लाख, बेलजियम ७७ लाख, हंगरी ७८ लाख, हालैंड ६८ लाख, आस्ट्रीया ६१ लाख तथा पुर्तगाल ६० लाख।

जब से गोकुल वल्लभ संप्रदाय का केन्द्र हुआ तब से व्रजभाषा में कृष्ण साहित्य लिखा जाने लगा। धीरे-धीरे यह समस्त हिन्दी भाषी प्रदेश की साहित्यिक भाषा हो गई। उन्नीसवीं सदी में साहित्य के क्षेत्र में खड़ीबोली व्रजभाषा की स्थानापन्न हुई।

कनौजी बोली का क्षेत्र व्रजभाषा और अवधी के बीच में है। कन्नौजी को पुराने कन्नौज राज्य की बोली समझना चाहिये। यह व्रजभाषा से बहुत मिलती जुलती है। कन्नौजी का केन्द्र फ़रुख़ाबाद है किन्तु उत्तर में यह हरदोई, शाहजहाँपुर तथा पीलीभीत तक और दक्षिण में इटावा तथा कानपुर के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। कनौजी बोलने वालों की संख्या लगभग ४५ लाख है। व्रजभाषा के पड़ोस में होने के कारण कनौजी साहित्य के क्षेत्र में कभी भी आगे नहीं आ सकी। इस भूमिभाग में प्रसिद्ध कविगण तो कई हुए किंतु इन सब ने व्रजभाषा में ही अपनी रचनायें लिखीं।

कन्नौजी

बुंदेली बुंदेलखंड की बोली है। शुद्धरूप में यह झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भूपाल, ओड़छा, सागर, नृसिंहपुर, सिवनी तथा हुशंगाबाद में बोली जाती है। इसके कई मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा छिंदवाड़ा के कुछ भागों में पाये जाते हैं। बुंदेली बोलने वालों की संख्या ६९ लाख के लगभग है। मध्यकाल में बुंदेलखण्ड साहित्य का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है किन्तु वहाँ होने वाले कवियों ने भी व्रजभाषा में ही कविता की है यद्यपि इनकी व्रजभाषा पर बुंदेली बोली का प्रभाव अधिक पाया जाता है।

बुंदेली

हरदोई ज़िले को छोड़कर अवधी शेष अवध की बोली है। यह लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, खीरी, फैज़ाबाद, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी में तो बोली ही जाती है इसके अतिरिक्त दक्षिण में गङ्गापार इलाहाबाद, और फतेहपुर में तथा कानपुर के कुछ हिस्से में भी बोली जाती है। बिहार के मुसलमान भी अवधी बोलते हैं। यह खिचड़ी वाला भाग मुज़फ्फ़रपुर तक है। अवधी बोलने वालों की संख्या लगभग १ करोड़ ४२ लाख है। व्रजभाषा के साथ अवधी में भी कुछ साहित्य लिखा गया था यद्यपि बाद को व्रजभाषा की प्रतिद्वन्द्विता में यह ठहर न सकी। पद्मावत और रामचरितमानस अवधी के दो सुप्रसिद्ध ग्रंथरत्न हैं। आधुनिक रचनाओं में कृष्णायन का उल्लेख किया जा सकता है।

अवधी

अवधी के दक्षिण में बघेली का क्षेत्र है। इसका केन्द्र रीवाँ राज्य है किन्तु यह मध्यप्रान्त के दमोह, जबलपुर, मांडला तथा बालाघाट के ज़िलों तक फैली हुई है। बघेली बोलने वालों की संख्या लगभग ४६ लाख है। जिस तरह बुंदेलखंड के कवियों ने व्रजभाषा को अपना रक्खा था उसी तरह रीवाँ के दरबार में बघेली कविगण साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी का आदर करते थे।

बघेली

छत्तीसगढ़ी को लरिया या खल्ताही भी कहते हैं। यह मध्यप्रांत में रायपुर और विलासपुर के जिलों तथा कांकेर, नदगाँव, खैरगढ़, रायगढ़, कोरिया, सरगुजा, आदि राज्यों में भिन्न भिन्न रूपों में बोली जाती है। बाजार की प्रधान बोली हलबी का मूलाधार भी छत्तीसगढ़ी बोली ही है। छत्तीसगढ़ी बोलनेवालों की संख्या लगभग ३३ लाख है जो डेनमार्क की जनसंख्या के बिलकुल बराबर है। मिश्रित रूपों को मिलाकर बोलने वालों की

छत्तीसगढ़ी

संख्या ३८ लाख के लगभग हो जाती है जो स्विटज़रलैंड की जन-संख्या से टक्कर लेने लगती है। छत्तीसगढ़ी में पुराना साहित्य बिल्कुल भी नहीं है। कुछ नई बाज़ारू किताबें अवश्य छपी हैं।

बिहारी उपभाषा

बिहारी उपभाषा के अन्तर्गत तीन ग्रामीण बोलियाँ मानी जाती हैं—भोजपुरी, मैथिली तथा मगही।

भोजपुरी

बिहार के शाहाबाद ज़िले में भोजपुर एक छोटा सा कस्बा और पर्गना है। भोजपुरी बोली का नाम इसी स्थान से पड़ा है यद्यपि यह दूर दूर तक बोली जाती है। भोजपुरी बनारस, मिर्ज़ापुर, जौनपुर, गाज़ीपुर, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, आज़मगढ़, शाहाबाद, चम्पारन, सारन तथा छोटा नागपुर तक फैली पड़ी है। भोजपुरी बोलने वालों की संख्या पूरे २ करोड़ के लगभग है। भोजपुरी में साहित्य विशेष नहीं है। संस्कृत का केन्द्र होने के अतिरिक्त काशी हिन्दी का भी प्राचीन केन्द्र रहा है किन्तु भोजपुरी बोली से घिरे रहने पर भी इस बोली का प्रयोग साहित्य में कभी भी विशेष नहीं किया गया। काशी में रहते हुए भी कविगण प्राचीन काल में ब्रज तथा अवधी में और आधुनिक काल में आधुनिक साहित्यिक खड़ीबोली हिन्दी में लिखते रहे हैं। भाषा सम्बन्धी कुछ साम्यों को छोड़कर शेष सब बातों में भोजपुरी प्रदेश बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश के अधिक निकट रहा है।

मैथिली

मैथिली बोली बिहार प्रान्त में गंगा के उत्तर में दर्भंगा के आसपास बोली जाती है। इसमें लिखा कुछ प्राचीन साहित्य भी उपलब्ध है। मैथिली कवियों में विद्यापति का नाम उनके पदों के कारण सबसे अधिक प्रसिद्ध है। मैथिली प्रदेश में एक भिन्न लिपि भी व्यवहार में आती है जो बङ्गाली लिपि से अधिक मिलती जुलती है।

मगही बोली बिहार प्रांत में गङ्गा के दक्षिण में बोली जाती है।

इसके मुख्य केन्द्र पटना और गया समझने चाहिए। मगही में कोई साहित्यिक परंपरा नहीं रही है। प्रादेशिक रूप में लिखने में कैथी लिपि का व्यवहार होता है। बिहार प्रांत की इन दोनों बोलियों के बोलनेवाले लगभग १⅓ करोड़ हैं।

मगही

व्युत्पत्ति की दृष्टि से बिहारी उपभाषा का सम्बन्ध मागधी प्राकृत तथा अपभ्रंश से माना जाता है। बंगाली, उड़िया तथा असमी का संबंध भी मागधी से है। यही कारण है कि भाषा संबंधी कुछ लक्षणों में बिहारी उपभाषा की बोलियाँ बङ्गाली आदि से अधिक मिलती जुलती मालूम पड़ती हैं। बिहार प्रांत में खड़ी बोली हिंदी ही साहित्यिक भाषा है। शिक्षा का माध्यम भी खड़ी बोली ही है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी बिहारी प्रदेश पश्चिमी मध्यदेश से संबद्ध रहा है।

राजस्थानी उपभाषा

पंजाब के ठीक दक्षिण में राजस्थानी उपभाषा का प्रदेश है। एक प्रकार से यह ठेठ मध्यदेश की प्राचीन भाषा का ही दक्षिणी-पश्चिमी विकसित रूप है। इस विकास की अन्तिम सीढ़ी गुजराती है किन्तु उसमें भेदों की मात्रा अधिक हो गई है। राजस्थानी उपभाषा के अन्तर्गत निम्नलिखित चार मुख्य बोलियाँ हैं :—

मेवाती-अहीरवाटी — यह अलवर राज्य में तथा दिल्ली के दक्षिण में गुड़गाँव के आस-पास बोली जाती है।

मालवी — इसका केन्द्र मालवा प्रदेश का इंदौर राज्य है।

जयपुरी-हाड़ौती — यह जयपुर, कोटा और बूँदी राज्यों में बोली जाती है।

मारवाड़ी-मेवाड़ी — यह जोधपुर, बीकानेर, जैसलमीर तथा उदयपुर राज्यों की बोली है।

राजस्थानी उपभाषा बोलने वाले प्रदेश में आजकल खड़ी बोली हिंदी ही साहित्यिक भाषा है। पुरानी मारवाड़ी बोली में साहित्य उप-

लब्ध है। इसे डिंगल कहते हैं। प्रादेशिक व्यवहार में महाजनी लिपि का प्रयोग होता है यद्यपि छपाई में देवनागरी लिपि प्रचलित है। राजस्थानी उपभाषा बोलने वालों की संख्या लगभग १½ करोड़ है।

पहाड़ी उपभाषा

पहाड़ी उपभाषा हिमालय प्रदेश में शिमला से नेपाल तक फैली हुई है। इसके अन्तर्गत तीन प्रधान बोलियाँ हैं :—पश्चिमी, माध्यमिक तथा पूर्वी।

पश्चिमी पहाड़ी — ये बोलियाँ सरहिंद के उत्तर में शिमला के निकटवर्त्ती प्रदेश में बोली जाती हैं। इन बोलियों का कोई सर्वमान्य रूप नहीं है, न इनमें साहित्य ही पाया जाता है।

माध्यमिक पहाड़ी — इसके दो मुख्य रूप हैं :—

१. कुमायूँनी—यह कुमायूँ अर्थात् अल्मोड़ा-नैनीताल प्रदेश की बोली है।

२. गढ़वाली—यह गढ़वाल राज्य तथा मंसूरी के निकट पहाड़ी प्रदेश में बोली जाती है।

इन दोनों बोलियों में साहित्यि विशेष नहीं है। यहाँ के लोगों ने साहित्यिक व्यवहार के लिए खड़ीबोली हिंदी को ही अपना लिया है।

पूर्वी पहाड़ी — यह नेपाल राज्य में बोली जाती है अतः इसे नेपाली, पर्बतिया, गोरखाली और खसकुरा भी कहते हैं। इसमें कुछ नवीन साहित्य है। यह देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है।

पहाड़ी उपभाषा के बोलने वाले लगभग ३० लाख हैं, किंतु यह संख्या बहुत निश्चित नहीं है।

पंजाबी उपभाषा

कुछ लोग पंजाबी को भी हिन्दी के अन्तर्गत स्थान दे देते हैं।

पंजाब प्रदेश इस समय भारत तथा पाकिस्तान में बँट गया है। दोनों भागों में पंजाबी बोलने वाले लगभग १½ करोड़ थे। बहुत से पंजाबी भाषी अन्य प्रान्तों में बिखरे हुए हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से पंजाबी पश्चिमोत्तरी आर्यभाषाओं अर्थात् लहंदा तथा सिंधी से अधिक मिलती जुलती है। पाकिस्तानी पंजाब में उर्दू साहित्यिक भाषा है तथा भारतीय-पंजाब में खड़ीबोली हिंदी का विशेष व्यवहार है। पंजाबी में कुछ साहित्यिक रचनाएँ भी हुई हैं। सिक्ख संप्रदाय के लोग इसे गुरुमुखी लिपि में लिखते हैं। गुरु ग्रंथ-साहब का अधिकांश भाग पंजाबी में नहीं है बल्कि प्रधानतया ब्रजभाषा तथा हिंदी की अन्य बोलियों में है।

पंजाबी

हिंदी की उपर्युक्त उपभाषाओं की प्रधान बोलियों तथा खड़ीबोली के आधुनिक साहित्यिक रूपों के उदाहरण प्रस्तुत पुस्तक में दिए गए हैं।

ग्रामीण हिन्दी

क. पश्चिमी उपभाषा

१. खड़ीबोली

(क) बिजनौर ज़िला

कोई बादसा था। साब उस्के दो राण्याँ थी। एक के तो दो लड़के थे ओर एक के एक। वो एक रोज अप्नो रान्नी से केने लगा मेरे समान ओर कोई बादसा है बी? तो बड़ी बोल्ले के राजा तुम समान ओर कोन होग्गा जेस्सा तुम वेस्सा ओर कोई नई। छोट्टी से पुच्छा के तुम बी बतला मुज समान कोई ओर बी राजा है के नई? कि राज्जा मुज्से मत बुज्झो। केह्या[1], नई, बतलाणा होग्गा। राणी ने किह्या कि एक बिजाण[2] सहर हे उस्के किल्ले में जितणी तुम्हारी सारी हैसियत है उत्नी एक इंट लगी हे। ओ हो इसने मेरी कुच बात नई रक्खी इसको तग्मार्ती[3] करना चाइये। उस्कू तग्मार्ती कर दिया। ओर बड़ी कू सब राज का मालक कर दिया।

ब्होत दिन बीच गये कुछ दिन बाद लड़कों ने केह्या कि हम उस सहर को देक्खणा चाते हैं केसा बिजाण सहर हे। बादसा ने दोन्नो कू इक्का घोड़ा ले दिया। लड़के व्हां से ब्होत सा माल खुजियों में भर क बेजान सहर कू चल दिये। ब्होत दिन बीच ग्ये खाणा थोड़ा साई रे गया। एक सराय में ठैरे थे। जब कुच बी खाणा नई मिला तो घोड़े तक बेच दिये। व्हाँ से बिजाण सहर ब्होत दूर था। ब्होत दिन

---

[1] कहा, [2] बेजान [3] निरवासित

हो गये तब तग्मार्ती का लड़का बोल्ला के मुज कू एक घोड़ा लादे तो भाइय्यों की खबर ले आऊं के बिजाण सहर गेये या नी गेये। वो मजल दर मजल चला जा रिया था। जिस सहर में स्राय थी व्हांई जा पोंचा। लड़के व्होत तंग हो गेये थे। घास बीच बींच कर गुजारा कर थे।

उसणे भटियारी से क्या केह्या के मेरे घोड़े क वास्ते घास ला। भटियारी ने लड़कों से क्या केह्या कि चलो हमारी सराय में एक बादसा जाद्दा आया हवा हे। लड़का दोन्नो घास लेकर सराय में आये। उस्कू पता बी चल गेया ता, कि बूज लिय्या था भटियारी से कि ये लड़के जा रये थे बिजाण सहर। उसणे बड़ी तवज्जे की, और मिठाई और पकोड़ी खूब मसाल्लेदार उनकू खलाई। सबेरा हवा तब व्हाँ से बिजाण सहर की राह ली। चलते चलते मजल दर मजल बिजान सहर बी आ लिया। व्हां क्या देखता हे के एक हाली हल जोत रिया हे। हात तो उसका हल में हे बेल वेस्सई सीद्दे खड़े हवे हैं। जो उस्कू अवाज दी तो बोलेई नी, बिजाण। और वो लड़का बिजाण सहर में पोंच लिया हे। देखता क्या हे कि चड़स चल रिया हे बेल ठांड़े प खड़े हवे हैं। मलिक चड़स पकड़ रिया है और जो उन्कू आवाज देता हे तो बोल्ते नई, बिजाण। आगे क्या देख्ता हे कि बौत अच्छा बाग हे। तरे तरे की रौस पट्टी पड़ी हई हे। फूल लगे हये हैं। लड़के ने अवाज़ दी तो माल्ली बोल्ताई नी, बिजाण हे।

व्हाँ से चल क लड़का बिजाण सहर के किले क करीब ई जा पोंचा। घोड़ा छोड़ क बादसा जाद्दे ने फाटक से बांध दिया और बिजाण सहर में चला गेया। देख्ता क्या हे के तमाम सहर बिजाण हे। लड़का भूक्खा था हल्वाई की दुक्काण कू गेया। लड़के ने हांक मार्‌री तो बोल्लाई नी, बिजाण हे। लड़के ने खाणा उठा क खा लिय्या और किम्मत दुकाण प रख दी। खाण्णा खा के लड़का व्हाँ से चल दिया। के व्हाँ की बादसाजादी को देक्खणा चइये किस जगे प रेती

हे । ओर सोच्चा किले कि एक इंट जरूर ले चलना चइये । अक नमूना दिखावे क बिजाण सहर गेया था। ओर अटारी प जां बादसाजादी रेती थी व्हाँ गेया । वो पलंग प सो रई ती । जो हांक मारे तो बोल्ली नी, बिजाण । इस्का बी नमूणा कुच ले जाणा चइये । लड़के ने अपना रूमाल और गुस्ताना उस्के हाथ में पिन्हा दिया ओर उस्का लेकर अपणे हाथ में पेन लिया । सब नमूणा ले लिया त व्हाँ से चल देया। उस सहर में कुछ देव रैवे थे। वो महीने दो महीने में उसे जान का कर देवे थे सो वो सहर जान का हो गेया ।

वो दोन्नो लड़के इस्के पेलेई घर पोंच गये ते ओर कहा, पिता, बिजाण सहर हम देख आये । वेसेई झूठमूठ कू बता दिया । फिर जब ये छोटा लड़का पोंचा ओर उस्णे तमाम नमूणा दिखा दिया तब बादसा बड़ा खुस हवा ।

फेर जब बादसा-जादी ने रूमाल गुस्ताना देक्खा तो बोली, कै तो उस बादसाजादे से सादी करा दे नई तो मैं बच्चूँगी नाय । उसने पूरा पता बता दिया। बादसा को वो लड़का ब्होत प्यारा लगा ओर सब राज का मालक उसेई बना दिया ओर उस्को लाने को चल देया । बिजाण सहर में सादी कर क उसी सहर का मालक बणा दिया । फेर बादसा ने उस छोटी रानी की बी भोत आबरू की ।

(श्री लालताप्रसाद शुक्ल द्वारा संकलित)

(ख) मेरठ जिला

एक दिन अकबर बादसा नें बीरबल तें पुच्छा, ओ बीरबल तू हमें बड़द[1] का दूध ला दे ओर नहीं तेरी खाल कढ़वाई जागी । बीरबल कूँ बहोत रंज हुआ ओर हुन्तर[2] आण के अपने घरूँ पड़ रहा ।

बीरबल की लोन्डी[3] नें अपणे मन में कहा की आज तो मेरा

[1] बैल, [2] वहाँ से, [3] लड़की

बाप बहोत सोच में पड़ा हे। आज के जाणे इसका का के ढब हुआ। जिब उन नें अपणे बाप कूँ पुच्छा, अरे बाप आज तेरा के ढब हे। बीरबल नें कहा की बेटी कुछ ना हे। फेर लोन्डी नें पुच्छा की पिता अपणे मन का भेद बताणा चाहये। जिब उननें कहा की बादसा नें कहा की के तो बड़द का दूध ला दे नहीं तम्में कोल्हू में पिलवाऊँगा। मेरे तें कुछ नहीं कहा गया ओर हाम्मी भर के आया हूँ ओर कुछ राह नहीं पात्ता। लोन्डी नें कहा की पिता जी या तो कुछ भी बात नाँ हे। तुम बे फ़िकर रहो। बीरबल उठ खड़ा हुआ।

खेर, जिब तड़का हुआ तो उस लोन्डी नें के काम करा की अपणा सब सिंगार करा ओर बहोत अच्छी पुसाक पहर के ओर कुछ कपड़े हाथ में ले के बादसा के किले के आगे कूँ लिकड़[1] जमना पर गई। बादसा किले पे चढ़ के जमना की सेल कर रहे थे। अकबर नें देखा की बीरबल की लोन्डी लत्ते धो रही हे। बादसा नें लोन्डी तें पुच्छा की ए लोन्डी आज क्यों तड़के ही तड़के लत्ते धोवण आई हे। जिब उस लोन्डी नें कहा की बादसा आज मेरे बाप के लड़का हुआ हे। बादसा नें छोह[2] में आ के कहा अरी लोन्डी भला कहीं मरदूँ के भी लोन्डे होते सुणे हें। लोन्डी ने कहा की बादसा भला कहीं बड़द के भी दूध होता सुणा हे। जिब बादसा कूँ कुछ बोल नहीं आया ओर लोन्डी कूँ कह दिया की तड़के ही तड़के बीरबल कूँ कचहड़ी में भेज-दे।

बीरबल तड़के ही कचहड़ी में गया। बादसा न पुच्छा की बीरबल लाया बड़द का दूध। बीरबल नें कहा क बादसा सलामत में तो कल तड़के ही लोन्डी के हाथ भेज दिया था। बादसा-कूँ कुछ बोल न आया।

---

[1] निकल, [2] क्रोध

२. बाँगरू

झींद रियासत

एक बाह्मण था अर एक बाह्मणी थी। बाह्मण चून मैंग-कै[१] लि आया करदा[२]। बाह्मणी कैह्ण लाग्गी इस नगरी मैं राज्जा भोज सै। यू सलोक[३] कौहा कै बाह्मणाँ ने एक मका सिओने[४] का दे सै[५]। इस राज्जा कै तौं भी जा कै कह दे। बाह्मण कैह्ण लाग्ग्या मैं सलोक नी[६] जाणदा। बाह्मणी कैह्ण लाग्गी सलोक तन्नै मैं सिख्या दींगी। फेर उन बाह्मणी नै सलोक सिख्या दिया, अक पैस्सा गाँठ मैं।

राज्जा भोज नै सै रोपया उस नै निआम[७] के दे दिया। बाह्मण तो अपणें घराँ चाल्ल्या आया।

राज्जा भोज एक खूर्जी रोपया की भर कै सैल मैं चाल्ल पड़्या। चाल्ल्या चाल्ल्या अपणी सुसराड़ बिग गया[८]। राज्जा भोज नै एक ल्हवाई की हाट पर डेरा कर दिया। ल्हवाई नै उस की खात्तर कर दे बार[९] हो गई। ल्हवाई रोज की रोज राज्जा भोज की रानी की महल मैं जाया करदा। ल्हवाई रानी खात्तर लाड्डू ले जाया करदा। उ दन तवल[१०] मैं औह लाड्डू भूला गया। ल्हवाई जद कमन्द पर चढण लाग्ग्या राज्जा भोज नै थाप्पी[११], अक तैं भी देख तो, के गियान सै। राज्जा की छोहरी[१२] कैह्ण लाग्गी लड्डू लि आया। ल्हवाई कैह्ण

---

[१] मांग के, [२] करता, [३] श्लोक, [४] सोने, [५] देता है, [६] नहीं, [७] इनाम [८] पहुँचा, [९] देर, [१०] जल्दी, [११] निश्चय किया, [१२] लड़की,

लाग्या लाड्डू भूल आया। राज्जा की बेट्टी ले के कोरड़ा ल्हवाई नै पिट्टण मँद गई[1]।

राज्जा भोज के पल्ले मैं चार लाड्डू बंध रे थे। राज्जा भोज नै औह साफा झरोखे मैं बगा-कै[2] मारा। राज्जा की बेट्टी कैहण लाग्गी यिह लाड्डू कड़ै[3] लाइ आए। ल्हवाई कैहण लाग्या लाड्डू राम ने दए सैं। फेर वाह राज्जा की बेट्टी लाड्डू खाण लाग्गी अर कैहण लाग्गी ल्हवाई ईसी लाड्डू मैं अपणे सासरे मैं बिआह ले गई जूँहीं[4] खाए थे। तेरे को बटेऊ[5] आ रह्या-सैं। ल्हवाई कैहण लाग्या, एक बटेऊ मेरे धोड़े आला[6] आ रह्या-सै। वाह राज्जा की बेट्टी कैहण लाग्गी, तन्नै चार सै रोपया दींगी उस बटेऊ नै मरवा दे।

ल्हवाई उतर कै चार जल्लाद्दां नै बला के लि आया, अक भाई चार सै रोपया लेओ। इस बटेऊ नै स्माणै मैं[7] जा कै मार देओ। चार जल्लाद्दां ने औह राज्जा भोज पकड़ लिया। राज्जा भोज कैहण लाग्या, भाई तम मेरा के करोगे। जाल्लाद बोल्लै, हमें तन्नै जी तै[8] मारांगे। राज्जा पुच्छण लाग्या, जी तै मारे तन्नै के थियावैगा[9]। जाल्लाद बोल्ले, भाई चार से रोपया थियावैगे। राज्जा बोल्ल्या, भाई तम नै रोपया पान सै दिआँगा, जी तै ना मारो। थारे शहर मैं जिऊँदा नाहीं बड़ूँगा[10]।

राज्जा भोज कै बाह्मण वाला सलोक सात्त[11] आ गिया। अक पैस्सा गाँठ मैं था, जो जी बच गया।

---

[1] पीटने लगी, [2] फेंक कर, [3] कहाँ से। [4] तब, [5] बटोही, [6] घोड़े वाला, [7] जंगल में, [8] जान से, [9] तुम्हारा क्या लाभ होगा [10] आऊँगा, [11] सत्य

३. ब्रजभाषा

(क) मथुरा के चौबे

एक मथुरा जी के चौबे हे[1], जो डिल्ली सैहर[2] कौ चले। तौ पैले[3] रेल तौ ही[4] नई, पैदल रस्ता ही। तौ एक डिल्ली को जो बनिया हो सो माल लैकै आयो वेचिवे कौं। जब माल बिक गयौ, जब खाली गाड़ियै लैकै डिल्ली कौ चलौ[5]। जो सैर के किनारे आयौ सो चौबे जी सै भेंट है गई। तौ बे चौबे बोले गाड़ी बारे सै, अरे भइया सेठ, कहाँ जायगो कहाँ की गाड़ी है? वौ बोलो, महाराज मेरी डिल्ली की गाड़ी है और डिल्ली जाउँगौ। तौ चौबे बोले, भइया हमऊं बैठाल्लेय। बनिया बोलो, चार रुपा लागिंगे भाड़े के। चौबे बोले, अच्छी भइया चारी दिंगे।

अब चौबे चुप बैठ गये। तौ बनिया बोलो, 'महाराज कुछ बात कहौ जाते रस्ता कटे'। तौ बे चौबे जी बोले, 'हमारी एक बात एक रुपा की है'। वा ने कई, 'अच्छो महाराज मैं दुंगो। तौ कई, 'पैली बात तौ हमारी एई है कि

'सब पञ्चन मिल कीजै काज
हारे जीते आवै न लाज।'

याय सुनिकै बनियौ बोलौ, 'महाराज, मोय तौ कछु या मैं मजा न आयौ तुम [illegible] एक रुपा छुड़ाय लियौ। कई, रुपा की बात तौ इतनी होय है, फिर तोय सेंतमेंत[6] की सुनामेंगे। तौ कई, महाराज और कुछ कओ। तौ कओ, सेठ, तेरो एक तौ चुको अब दूसरे रुपा की कएं? सू दूसरी बिन्नैं बात कई 'कि

---

[1] थे, [2] शहर, [3] पहले, [4] थी, [5] चला [6] मुफ्त में, [7] कही

'औघट घाट नहियै'।

कई, 'मोय मजा न आयौ।' कई, जिजमान, मजा की फिर सुनामेंगे, तेरो भाड़ो तौ पूरो कर दें'। कई, महाराज अब तीसरी बात कओ। तौ कई, तीसरी बात जे है कि 'घर मैं इस्त्री तैं सांच न कहे'। कई, महाराज चौथिऔ कै देओ। कई, 'कछु कसूर बन जाय तौ सांच कहे, सांचकौ आँच कहूँ नायं'। कही, जिजमान तेरो भाड़ो तौ चुक गयो अब तोय सेंतमेंत सुनावत चलैं। फिर बाय रंगबिरंगी बातैं सुनावत भए डिल्ली के किनारे तक पौंच गए।

जब डिल्ली द्वै कोस रै[1] गई तब जिजमान को गांव आयौ। सो चौबे जी तौ उतर पड़े। जब कोस भर अगाड़ी और चलो तौ एक गांव और आयौ मां तै[2] डिल्ली कोस भर रै गई। वा गांउं मैं कैसी भई कि एक साधू मर गओ। तौ गांउं वालिन नै कही बिचार कियौ कि या कौं जमुना जी मैं फिकवाय देयं तौ याकी मोच्छ है जाय। तौ सब लोग या पैंड़े[3] मैं ठाड़े कि कोई खाली गाड़ी आय जाय तौ याय डिल्ली भिजवाय देअं। इतनेई मैं जा बनिये की गाड़ी चली आई। तौ गांउ वाले आदमी बोले कि तेरी खाली तौ गाड़ी हैयै, तू या साधू को लै जा, याकी मोच्छ है जायगी। वौ बनिया बोलो, मैं ऐसे इल्जाम वाले मुर्दा कौ नईं पटकौं। गांउं वाले बोले, तोय बड़ो पुन्न होयगो। इल्जाम की कहा बात है।

तौ मोयं (बनिये को) चौबे जी की बात याद आई 'सब पंचन मिल कीजै काज, हारे जीते आवै न लाज'। तौ मैंनैं वाकौ बैठाल्लियौ, मेरो कहा बिगडैगो, धर्म को मामलो है। जब मैं बाय लैकै चलो तौ मोय दूसरी बात याद आई चौबे जी की कि, 'औघाट घाट नहियै'। तो मै बाय औघट घाट लै गओ जां कोई देखै नायं। तौ मैं बाय उठाऊं तौ उठै नायं, मरे मैं तो बड़ो बोझ है जाय। सो मैंनैं हात पांय

---

[1] रह, [2] वहाँ से, [3] प्रतीक्षा

पकड़ कै खैंचौ जो वाकी धोती खुल गई। धोती के खुलत खन[1] सौ असर्फी निकरीं। जो मैं नईं लाउतो तौ कां से निकर्नी और चौगान कै घाट पै लै जातो तौ सब कोई देखतौ। वां काऊ नै नईं देखौ। अब मैंनैं साधू कौ तौ घसीट कै जमुना जी मैं फैंक दियौ और गाड़ी धोय लीनी और जल्दी के मारे असर्फी की बासनी[2] भूल कै चल दियौ। जब थोड़ी दूर आयौ तौ याद आई कि बासनी तौ ह्वांई भूल आयौ। लौट कै आयौ तौ देखौं तौ ह्वांईं धरी। अब मैं बड़ो खुसी होत भयौ घर आयौ।

अब घर मैं आयौ तौ रात मैं लुगाई सै बात भई तौ लुगाई[3] से सांच कै दीनी। सबेरे मैं तौ दुकान पै चलो गयौ और लुगाई से पार पड़ोस मैं बात भई तौ वानैं कै दीनी कि मेरो धनी[4] एक साधू की सौ असर्फी लायौ है। सो वा बात फैलत फैलत बास्साह के पास जाय पौंची। सो बास्सा नैं सेठ कौ पकड़ि बुलायौ। अब सेठ काँपज्जाय[5] और जात जाय। अब जौ चौबे जी की चौथी बात सांची होयगी तौ बच कै आउँगो। बास्साह कै सामनैं हाजिर भयौ। बास्साह बोलो, ऐ रे बनिया तू कहां से लाया सच कहेगा तौ छोड़ दिया जायगा नहीं तौ मारा जायगा। बनिया बोलो, हजूर मैं सच कहूँगो आप जो चायं[6] सो करैं। वानै सगरी[7] कथा कई और कई कि मैं काऊ कौ मार कै नईं लायौ, हजूर मोयं तौ चौबे जी की बात को फल मिल्यौ अब आप हजूर मालिक हैं। बास्सा बौले, तैंनें सच कह दिया जा तेरी मा का दूध है, ले जा।

(खिलन्दर चौबे)

---

[1] खुलते ही [2] कमर में लपेटने की थैली, [3] स्त्री, [4] पति, [5] काँपता जाय, [6] चाहें [7] संपूर्ण,

(ख) एटा ज़िला

एक ठाकुर हो[1]। बा नें एक कोरिया कूँ बेगार में पकरो और अपनी घुड़िया के संग बाइ लिवाइ के अपनी सुसरार कूँ चलो। तब कोरिया की मैतारी[2] नें कही कि बेटा जब ठाकुरु खुसी हों तब अढ़ाई सेर रुई माँग लीये। कोरिया ठाकुरु के संग चल भयो।

जब ठाकुरु सुसरार में भीतर गओ, कोरिया कूँ अपनी घुड़िया थमाय गओ और जताइ गओ कि जाइ चोट्टा[3] न लै जामैं। आधी रात भयें कोरिया सोइ गओ। घुड़िया चोर ले गये। धौतायें[4] बा नें देखो तो घुड़िया न पाई। लगाम लै कें अटरिया में जा जग्गै[5] ठाकुरु सोवत हे पोंचो और कही कि,' ओ ठाकुस सा 'अटलन-खुनखुन' तो मो पै है 'हुन हुन' का तुम लै गये हो'? जे सुनि ठाकुरु उठि कें ढूंढ़बे कूँ भाजे। कोरिया बिन के संग लगि लओ।

राह में एक नदिया परी। ठाकुरु नें कोरिया कूँ अपनी तरबार गहाइ दई[6] और कही कि मेरे संग उतरि आ। जब बीचों बीच पोंचो तरबार मियान में तें निकरि परी। कोरिया नें कही, ओ ठाकुस सा जामें सूँ मिंगी[7] निकरि परी और चोकलो[8] मो पै रहि गओ। ठाकुरु नें कही कि कों गिरि परी ? तब बा कोरिया नें नदिया में मियान फेंक कें बताओ कि बाँ गिरो है। मियान हू बह गओ। जा पै ठाकुरु खूब हँसे।

कोरिया नें, हात जोरि कें कही भले ठाकुरु, अम्मा नें अढ़ाई सेर रुई मागी है।

---

[1] था, [2] माता, [3] चोर, [4] सुबह [5] जगह, [6] पकड़ा दी, [7] मींग, [8] छिलका

४. कनौजी

(क) कनौज

एक दिन का भओ कि हम अपने दुआरे ठाढ़े रहैं औ एक अँधरो फकीर सड़क पर भीख मांगि रहो हतो कि एत्तेह में एक मोटर निकसी। मोटर वाले ने आदमी क सामने देखि के कइयौ दांह भोंपा बजाओ लेकिन वउ तउ अँधरो आदमी वहिका का सुझाई परै कि कै छोर घांइ मोटर है? ऐसो कुछ भओ कि जिछोर जिछोर वउ अपनी मोटर घुमावै वैछोरै वैछोर वहु फकीरउ घूमि परै। हिया तक कि मोटर बिलकुल्लि वहि के तीर आइ गई।

तब मोटर वाले ने एक बारगी मोटर रोंकि दई और वहि में से एक आदमी उतरो औ फकीर क डांटन लगो कि हम एत्ती देर से भोंपा बजाइ रहे हैं तुम्हैं तनिकौं सुनाइउ नाई पर्ति हैं जो हम मोटर रोंकि न लेते तौ ठउरई मर जाते। वउ फकरीउ बड़ा झगड़ी रहै। मोटर वाल्ले से कहन लगो कि तुम्हई आंखी खोलि के चलाओ करौ हम तौ अंधरा हई हैं। अभई जो हम मरि जाते तौ तुमसे हियई पर दुइसै रुपिया धराइं लेते।

(श्री बलभद्रप्रसाद मिश्र द्वारा संकलित)

(ख) कानपुर ज़िला

याकैं[1] हते[2] राजा बीर बिकरमाजीत। तिन-के याक रानी रहै[3] उइ राजा औ रानी माँ बाजी लागी कि याक चिरैया बोलति रहै। तौन राजा तौ कहत रहैं कि हंस बोलतु है, औ रानी कहती हतीं कि कौनवा[4]

---

[1] एक, [2] थे, [3] थी, [4] कौवा,

बोलतु हुइ है। ऐसी हुज्जत रहै कि वहै चिरैया पेंडे[1] पै से उड़ि भाजी। तौ कौनवै निकलो। तब तो सरमाय कै राजा रानी कइहाँ निकारि दीन्हिनि।

रानी के उइ राजा ते अढ़ाई महिना को औधान[2] हतो। उइ रानी का चलत याक मड़ैया[3] मिली। तौन तया केरी[4] मड़ैया कहावति हती। तौने माँ जाय कै रहीं जाय, औरु मड़ैया माँ टटिया लगाय लीन्हेनि। जब थोरी बिरियाँ माँ तया उइ मड़ैया के नेरे आये तब कहन लागे कि ई मड़ैया माँ लरिकिनी होय तौ लरिकिनी और लरिका होय तौ लरिका होय। तब वहि माँ से उइ रानी ने जवाबु दओ कि हम फलानी आहिनु औरु अपनु सब बिथा तया से कहि डारी। तया वाहि की लरिकिनी ही की नाईं रच्छा कीन्हेनि।

फिरि नवमें महिना माँ उइ रानी के एकु लरिका भओ जब वहु लरिका बड़ो भओ तब औरे लरिकवन माँ खेलिबे का जान लागो और जब अनुवादु[5] करै तब उइ लरिकन ते सौगंधै खाय कि हम ऐसे नाहीं करो है। तब सब लरिकवा वहि के धौल मारैं। तब फिरि हर दाँय तयै को सौगन्ध खाय औ कहै कि हम अनुवादु नाहीं करो है। आखिर का उइ सब लरिकवा वाहि-से कहैं कि अपने बाप को नाउँ बताव। तब वहि ने तयै को नाउँ बता दओ। तब फिर उइ लरिकवा वहि से कहैं कि, घा ससुर तयै की सौगन्ध खाति है औरु तयै का बापु बनावति है औरु वैसे तौ तया केरी गुलानु है।

तब फिरि महैं[6] सरमाय करि के अपनी मैया से बापु को नाउँ पूँछो। तब वहि की मैया ने बापु को नाउँ बिकरमाजीत बताय दओ। दूसरे दिन बिकरमाजीत की सौंगध खाई। तब उइ लरिकवन वहि से कहो कि, ससुरऊ औरौ कबहूँ बिकरमाजीत को नाउँ सुनो है कि अबहीं

[1] वृक्ष [2] गर्भ, [3] कुटी, [4] साधु की, [5] शरारत [6] बहुत

जानत हौ ? तब फिर ई सरमाय गयो औरु अपनी मैया से कहो जाय कि हम अपने बाप के तीरा जैबे और कहिकै चलो गओ।

जाय कै उइ देश माँ पहुँचो जाय। हुवाँ याक कुआँ माँ पानी भरती हतीं। उन ते कहो कि हमका पानी पियाय देउ। कहन लागीं कि पियाय देती हनु। तब फिरि वहि ने कहो कि हम का जल्दी पियाय देव। तौ उइ कहन लागीं, ऐसै जल्दी होय तौ कुआँ माँ कूद परौ। तब कूदि परो। तौ वहि माँ देखो कि याक वहि माँ बहुतै नीकी लरिकिनी दैन्तुर केरी[1] बैठी है। तौन दैन्तुर बारा कोस इंगे[2] औरु बारा कोस उंगे[3] मानुस केरी महँक तक नाहीं राखति रहै। तौन मानुस की महँक पाय कर लरिकिनी से पूँछौ कि ह्याँ मानुस की महँक जानि परति है। लेकिन वहि ने भुनगा[4] बनाय कै लुकाय राखो।

जब दैन्तुर चलो गओ तब भेदै भेद उइ लरिका ने लरिकिनी ते उइ दैन्तुर केरे मरिबे की जुगुति पूँछि लई औ ओही जुगुति ते वहिका मारि डारो औरु वहिका ओही कोनवाँ से[5] ऐंचि लाओ औरु वहि के साथ बिआइ करि लओ औरु बिकरमाजीत कौ लरिका बनि गओ।

---

[1] दैत्य की, [2] इधर, [3] उधर, [4] एक छोटा कीड़ा, [5] कुयें से

को मूँह को कुदाई[1] हेर के बोलो कि सुनो भइय्या तला में[2] रेइ-के मगरा सों बैर करबो भलो नइयाँ, और अब तो हमने जा ठान लयी कि खेती पातो जा गांव में ना करें। बनजी भारी[3] कर कें अपनो पेट भरहें और अपनी मड़य्या में डरे तो रेहें।

बा बेरा हुना मुत के[4] मान्स जुरे ते। किसान की बातें सुन के मोंगे हो गये। उनमें से एक जने ने कयो के सुनो भैय्या जबर फरेबी के आँगें निबल बे-अपराधी की बात काम नई आउत, ता सें भइय्या गम खाओ और अपने घरें बैठ रओ।

(ख) ओरछा रियासत

एक बेरै एक हाँथी मर गवो तो[5]। जब ऊ को जी[6] जमराज के गवो। तौ उननैं पूँछी कै तें इतनौ बड़ो है और आदमी जो इतनौ हलकौ, ऊ के बस मैं काये रात[7] ? हाँथी को जी बोलो कि तुमैं मुरदन सैं काम परत है, अबै जिंदन सें काम नहीं परो। जमराज सोचे कि जिंदा कैसे होत हू हैं। अपने जमदूतन खाँ[8] हुकम दवो कि जाव सिंसार सैं एक जिंदा लै आवो। बे गये और एक मुसद्दी[9] कौ लै आये जो अपनी खाट में सब अपने कागद आगद धरें सोवत तो। जम जमपुरी में पहुँचे तौ मुसद्दी खाँ एक जागाँ[10] उतार दवो, और अपुन जमराज कैं गये।

इतनैं बीच मैं मुसद्दी नैं उठ कैं अपनें सब कपड़ा पहिने और एक परवानौ बिसनु की कचहरी को लिखो कि जमराज खारज, व सिबराज[11] बहाल, और त्यार होकैं बैठ रहे। जब जमराज के सामनै गये तब झट परवानौ उनैं दवो। जमराज नै परवानौ देखत-नइ सब

---

[1] बातों की वीरता, [2] तालाब में, [3] तिजारत इत्यादि [4] बहुत से, [5] मर गया था, [6] जीव, [7] क्यों रहता है, [8] को [9] लेखक, मुंशी, [10] जगह, [11] मुसद्दी का नाम

अपनी जागाँ कौ काम सिवराज खाँ सौंपो और अपुन बिसनु कें गये और बिंतवारी करी कि मासें का काम बिगरो कि मैं बरखास कर दवो गवो।

इतनें बीच में सिवराज नें अपनें हेती ब्यवहारी मिरत लोक सें बुला कें खूब सुख करो और फिर उतई पठवा दवो। बिसनु जमराज खाँ संगै लै कें सिवराज के पास आये और बोले सिवराज सें कि तुम नें अब खूब काम कर लवो है, और फिर सिवराज खाँ मिरत लोक में पठुवा दवो, और जमराज सें कही कि देखौ जिदा कैसे होत हैं। फिर जमराज खाँ उन को काम सौंप कें अपनें लोक खाँ चले गये।

ख. पूर्वी उपभाषा

६. अवधी

(क) प्रतापगढ़ ज़िला—पूर्व

एक अहीर के घरे माँ चार मनई लरिका, सास, पतोह और बाप रहत रहें। मुला[1] चार्यू बहिर रहें।

बेटौना एक दिन खेते माँ हर जोतत रहा औ ओही ओरी से दुई राही चला आवत रहें। वै बेटौना से गुहराई कै[2] पूँछिन कि हम रामनगर का जावा चाहित अहै कौनी डगर से जाई? तौ ऊ अहिरवा जानिस कि हमरे बरधवन का पूछत अहैं कि बेचव्या? औ गोहराय के कहिस कि बरधवन का हम न बेचबै। यहि पर रस्तागीरै गुहराइ कै कहिन कि हम का बैल न चाही, रह्या[3] जौ जानत हुआ तौ लखाइ द्या[4]। तौ ऊ जानिस कि सौ रुपैया बरधन कै लगावत अहैं। औ गुहराइस कि राजू, सौ रुपैया काव जौ दुयू सौ देत्यो तबहूँ हम आपन बरधवन तुहैं न देइत।

कछुक बेर माँ ओह के महतारी रोटी वहि के बरे लौई। रुट्या खाती बेरा बेटौना बोला माई हो, आज दुइ मनई बरधवन के सौ रुपैया देत रहें। मुला हम कहा कि दुई सौ का हम न देबै, सौ रुपैया कौन चीज आटै। महतरया बोली कि हाँ बच्चा हम हूँ जानित है कि सागे माँ[5] लोन[6] आज सेवाइ[7] हुई गवा अहै। मुन्ना जौन कुछ होइ तनी तुनी ऐसिन खाइ ल्या।

---

[1] किन्तु, [2] बुलाकर, [3] रास्ता, [4] दिखा दो [5] साग में, [6] नमक, [7] अधिक

लौट कै जब घरे आइ तौ पतोहिया से[1] कहिस कि तोन सागे माँ अस सेवाई कै दिहे कि बेटौना से रोटी नाहीं खाइगै। तौ ऊ कहिस कि बासन[2] दै कै मैं मिठाई कब लिह्यों रहा। दादा जौन दुआरे पर बैठ रहत हैं चला तिन से हजुराइ देई[3]।

दूनौ झगरत झगरत जौ दुआरे पर आईं तौ पतोहिया ससुर से बोली कि कहो, तूँ हमैं बासन दै के मिठाई लेत कब देखे रह्या? तो ससुरवा बोला कि गोरू चरावै तौ तूँ जा औ लाठी हम से पूँछव्या?

(ख) प्रतापगढ़ ज़िला—पश्चिम

याक घरे माँ कथा कही जात रही। पण्डित जौन कथा कहत रहें सगरे गाँव का न्योतिन रहें। सुनवैयन माँ याक अहिरौ आवत रहै। ऊ कथवा सुनतीं बेरा ख्वावा बहुत करै, औ पंडितौ वहि का प्रेमी जान कै वहि का नीकी तना बैठावैं औ खूब खातिर करैं। याक दिना पंडितौ पूँछिन कि राउत, तूँ ख्वावत बहुत हौ, तुम का काउ समझ परत है? तौ अहिरवा औरौ सेवाइ[4] ख्वावै लाग औ कहिस कि महाराज मोरे याक भैंस बिआन रही। कुछ बगद गवा[5] औ ऊ बहुतै बेराम[6] हुइ गै, औ पड़ौना का[7] नेकचाइ न देत रही[8]। तौ पड़ौना दिना भर चिच्यान औ साँहीं जूनी[9] मरगा। तौन पंडित, वहै कै नाई तूँहूँ दिना भै चुकरत रहत हौ[10]। मैं का डेर लागत है कि कतहूँ तूँहूँ न ओकरी नाई[11] मर जा।

---

[1] बहू से, [2] बर्तन, [3] पुछवा दूँ [4] अधिक, [5] बिगड़ गया, [6] बीमार, [7] बच्चे को, [8] निकट नहीं आने देती थी, [9] संध्या समय, [10] बोलते रहते हो, [11] उसकी तरह

७. बघेली

माडला ज़िला

कोई देश में कोई बैपारी एक भारी तालुकाकेर मालिक बन कर ओमें सुख चैन से रहत रहैं। ओ कर[१] तीन ठुन मीत रहै[२]। ओ में से दुइ झनला[३] खूब मोह करत रहै और दुइ झन से तीसर मीत ओकर से खूब मोह राखत रहै। और ओ ओ ला[४] तनक[५] मोह करत रहै। और ऐसन होत रहे कि आँगू जब ओ कर दुइ मीत बैपारी केर भलाई और माया में मगन होत रहै तब तीसर मीत फिकर में हुइ के ऐसन बूझै कि मोर से बैपारी काहिन काज गुस्सा भइस है।

पछारी ऐसन भइस कि बैपारी कोनों बात में राजा के ढिगा कसूर में झुक गइस[६]। तब राजा ओ ला बोलाइस कि बैपारी मोर ढिगा आय के ओ बात केर जुबाब देय। ऐसन बात राजा केर बैपारी सुनकर खूब डराइस और सोचन लगिस कि असना[७] दुख संकट में कसना करूँ। मो से बड़ा चूक भइस है कैसे राजा के आँगू मंतक[८] रहैला परही, और भगेला जुगत निह बनय। और राजा धरमी और न्याय छनइया[९] होही, तो मो ला यह चूक में बिना दुख सजा दये निह मान ही। एक जुगत है जो मोर मीत हैं उनी ला संग लै जहूँ, उन मोर न्याव के बीच माँ बोलहीं, और राजा से कहहीं कि राजा महराज अब की चूक ला समोरव ले[१०]। और मो ला दुख सोच से बचाहीं। तो कौन जाने राजा ओ कर सुन लेय और मो ला सजा झंप दवावे[११]।

---

[१] उसके, [२] मित्र थे, [३] जनों से, [४] उससे, [५] कम, [६] फँस गया, [७] ऐसे, [८] चुप, [९] न्यायी, [१०] क्षमा कर दीजिये, [११] माफ कर दे।

तब बैपारी अपन मीत ला बोलाइस और ओ ला ये हाल बताइस और हाथ जोरिस बिनती करिस कि भाई, राजा कहाँ[1] मोर संग चल और मोर तरफ से राजा से बिनती करके मोर जीव ला बचाय ले। तब वह ओ ला कहिस कि भाई यह तोर असल जुगत है। मैं राजा के ढिगा तोर संग निह जाऊँ। मैं कौन मुँह लय के जाहूँ और राजा ला बिनती करहूँ। राजा मोर ऊपर गुस्सा निह करही? कसूर चूक में तुही झुके हस, अकले तुहीं जा, मैं निह जाऊँ।

बैपारी यह गोठ[2] सुन के ज्यादा दुख में वैहाघाई[3] हुय के विचारन लगिस हाय हाय मैं जनों कसना करूँ मैं दूसर मीतला बोलाहूँ। ओकर भरोसा है वह मोर संग राजा कहाँ चलही। तब दूसर मीतला बोलाइस, और ओकर दूसर मीत आइस, और ओला सब हाल बताइस। तब वा ओला कहिस, अच्छा है मैं चलहूँ। मीतकेर गोठ बैपारी सुनकेर खुसी भडस और उन दोनों झन एकई संग उठके रेंग दीइन[4]। जब गाँव के फटका[5] ढिगा पहुँचिन तब बैपारीकेर सगी मीतओला कहन लगिस कि भाई अब डराथूँ। राजा के आगू में काहिन बताहूँ। कहूँ राजा मोर गोठ सुन के मोला गुस्सा होय। कहूँ मोला सजा दवावे। मैं घरला मुरके जाहूँ। तोर संग निह जाऊँ। ऐसन बताय के भग दीइस।

बैपारी जब असना देखिस तो अपन ऊपर साँस लेन लगिस और आह मारन लगिस कि हाय हाय जिन ला मैं मीत जानत रहों और खुसी और आनन्द के दिन में मो से बड़ा प्रीत राखत रहे अब दुख में मोला छोड़ दीइन। भगन देव असना छलीन ला[6]। मोर एक मीत और है। ओला बोलाये ला मुस्किल है। काहे से कि ओला मैं नीच जानता रहों। ते कर लये वह मोर सहाँव[7] निह होही। मोला[8]

---

[1] के निकट [2] बात, [3] बेहोश, [4] चले, [5] फाटक [6] छलियों को, [7] सहायक, [8] किन्तु

और कोई जुगत तो सूझ निह परै। मैं ओकर ढिग जाहूँ। कहूँ मोला वह उदास और रोवत देख केर ओकर मन घुट जाय और दया करय मोर बिनती ला सुन लेय। तब ओकर ढिगा बैपारी गइस और सरमाय के व आँखन में आँसू भर के कहिस ए प्यारे भाई, दया करके मोर चूक ला समोख ले। मोर असना[1] हाल है। दया करके आव और राजा से मोर पुकार करके मोला बचाय ले। ओकर तीसर मीत दुख केर बात सुन के कहिस कि भाई तोर आये से मोला बहुत खुसी भइस। मोर और तोर आँगू के बात ला जान दे, कोई बात ला भय घोम्ब[2]। मैं सब दिन तोर ऊपर माया[3] करत रहों। अब मोला जहाँ लग बन परही तहाँ लग तोर भलाई करहूँ। राजा मोर चिन्हार है।

सो वे दोई झन राजा ढिगा रींग दीइन। और ओह राजा से पुकार करिस। ओकर पुकार राजा सुन लीइस। और बैपारी ला अपना ढिगा बोलाइस। और सजा केर बदली माँ ओला माया करिस।

---

[1] ऐसा, [2] न याद कर, [3] प्रेम

८. छत्तीसगढ़ी

बिलासपुर ज़िला

एक ठन गाँव माँ केवट और केवटिन रहिस। तेकर एक ठन लइका[१] रहिस। केवट हर महाजन के रुपिया लागत रहिस। तब एक दिन साव रुपिया माँगे बर आइस। तब सियान मन[२] घर माँ न रहँय। लइका घर राखत बैठे रहय। साव हर पूँछिस कस रे बाबू[३], तोर दाई ददा मन कहाँ गये हैं। वोतेक माँ टूरा हर[४] कहिस के मोर दाई गये हैं एक के दू करै बर, और ददा हर काटा माँ काटा रूँधे बर गये है। तब साव हर[५] कथय, के कैसे गोठियात हस[६] रे टूरा? तब टूरा कथय, मैं तो ठौका[७] गोठियाथौं। ओतेक माँ टूरा के औ साव के लराई भय भय। साव हर कहिस के तैं जौन बात ला गोठियाये हस तौन बात ला सिरतोन करदे[८]। नहीं करबे तो तोला साहेब के कचहरी माँ ले जाबो। तब तोला सजा हो जाही। टूरा हर कहिस मोर दाई ददा मन जतका तोर रुपिया लागत हैं तेलो तैं छाँड़ देवे तब मैं ये कर भेद ला बता हौं। ओतेक माँ सावहर कहिस के भेद ला नहीं बताबे तौ तोला कैद करवा देहौं। तब टूरा हर कहिस हौ महराज चल। साहेब लँग चलौ।

केवट के टूरा औ साव दूनो मन[९] साहेब लँग गइन। साहेब लँग साहहर फरियाद करिस के महाराज मैं आज बिहनिया[१०] केवट के घर गयौं तब केवट और केवटिन खर मां नहीं रहिन। वोकर लइका

---

[१] लड़का, [२] बड़े लोग, [३] ऐ लड़के, [४] लड़के ने, [५] साहूकार, [६] बोलता है, [७] ठीक [८] सच साबित करदे, [९] जन, [१०] प्रातः

रहिस तब मैं वो-ला[1] पूँछेंव के कस रे बाबू, तोर दाई ददा मन कहाँ गये हैं। तब ये टूरा हर कथय कि मोर दाई गये हैं एक के दुई करे बर, औ ददा गये है काटा माँ काटा रूँधे बर। तब येकर औ मोर लराइ भय गय। येकर मोर हार जीत लगे है। येकर नियाव ला कर दे, ये हर जैसन गोठियात हवै। साहेबहर टूरा ले पूँछिस के कस रे टूरा येकर भेद ला बतैबे। टूरा कहिस, हौ महाराज साव हर सबो रुपिया ला छाँड़ देहौ ना महाराज। वोतेक माँ साहेबहर साव ला पूँछिस के ये कर भेद ला टूराहर बताय देही तो सबो रुपिया ला छाँड़ देवे ना। साव कहिस हौ महाराज। औ नहीं बताहीं तौ सजा हो जाही न महाराज? साहेब कहिस अच्छा तुम मन चुपे चुप ठाढ़े रहा।

साहेब टूरा ला पूँछिस, कस रे टूरा तैं कैसे सावला[2] गोठियाये। टूरो कहिस मैं ऐसन गोठियायों के साव पूँछिस के कस रे बाबू तोर दाई ददा कहाँ गये हैं? तब मैं कह्यौं के मोर दाई गये है एक के दुई करे बर, औ ददा गये है काटा माँ काटा रूँधे बर। सुना महाराज, मोर दाई गये है चना दरे बर। तब एक ठन के दू दार होत है। येकर भेद इया भय महाराज। दूसर बात ऐसन अय के मोर ददा हर भाटा बारी माँ काटा रूँधे बर गये रहिस। तब महाराज भाटा माँ काटा होत है। तब मैं कह्यौं काटा माँ काटा रूँधे गये हैं। इया साव हर लराई लरिस मोर लँग। साव हर वोतेक माँ बड़बड़ाये लागिस। साहेब कहिस, चुप रहो साव। तैं तो हार गये। इया टूराहर जीत गइस। टूराहर सिरतोन बातला बताइस है। रुपिया ला छाँड़ दे।

---

[1] उससे। [2] साहूकार से

ग. बिहारी उपभाषा

६. भोजपुरी

गोरखपुर ज़िला

एक जनी अहिर ससुरारि करै गइलैं। उहाँ राति के दीआ बरत रहै[१]। इ कब्बो[२] दीआ बरत देखले नाहीं रहलैं। अपने मन में कहलैं हो न हो ई है अँजोरिया कै बच्चा[३]। जब उनकैं ससुर नेग बिदाई देवै लगलैं त ई कहलैं, ए राउत, हम लेब त अँजोरिया कै बच्चै लेब। ससुर दे दिहलैं। बाकरि[४] इनके मन में तब्बो खटका रहल। राति के जब सब सूति गैल[५] तब ई दीआ छान्ही[६] के नीचे चांरा दिहलैं। घर में आगि लगि गइल। सज्जी[७] धन दौलत बिला-तिला गइल[८]। इहो रोए लगलैं, हमार अँजोरिया कै बच्चा ओही में जरि गइलैं! सब लोग जानि गइलैं कि इहै सार घर फुकलसि है॥

(सरवरिया)

---

[१] चिराग जलता था, [२] कभी, [३] उजियाली अर्थात् चाँद का बच्चा, [४] किन्तु, [५] सो गये, [६] छप्पर, [७] सब, [८] नष्ट हो गई।

१०. मगही

गया ज़िला

बाघ, हुँडार[१] और कँदुआ[२], एक बेरी ई तीनों मिलके अप०-नन में मत मेरौल० कन[३] कि सब मिल के सिकार मारीं और फेर अप०नन में बाँट लिही। ई कह जँगल०वा में उछ०ले कूदे लगल०-थिन[४]। औ जब एगो[५] बड़०गो करिया हरिन मार लेल०थिन तब बघ०वा बोल उठलइ कि लाव० एक०रा बांटिअउ। और तुर०ते ओकर तीन कुद्दी[६] करके हंभर कर[७] बोल०लइ कि, पहिल कुदि‌या तो हम लेउब, काहे कि हम बनके राजा हिअउ, दोस०रो भी हम०हीं लेबउ काहे कि एक०रा मारे में बड़ मेह०नत कर०लीं ह०, और तेसर कुद्दी धरल हउ, देखिअउ केकर दम चल० हउ कि हम०रा आगूँ से ले जा ह०।

ई सुन के कंदुआ और हुँड०रा डरा के भाग गेलन और बघ०वा अकेले हरिनिया के खइल० कइ। ई कहतूत सच्चे हे कि जेकर लाठी ओकरै भइस।

---

[१] भेड़िया, [२] चीता, [३] मत मिलाप, [४] लगे, [५] एक, [६] हिस्सा, [७] गरज कर (बाघ की बोली)।

सूचना—० से तात्पर्य अर्द्ध अ से है।

११. मैथिली

दक्षिणी दर्भंगा

एगो[१] गँवारि गोआरिनि माथा पर दहेरी[२] धैलै चलल जाइ रहैय०। चलैत चलैत ओक०रा जी में ई उमंग उठ०लै, जे ई दही के बेंचब, पैसा सैं आम मोल लेब। किछु आम हम०रा जौरे[३] अछ[४]। सभ मिलाई कै तीन सै सैं किछु बढ़ि जाइत। ओकरा में सैं[५] किछु सरिपचि जाइत। तब हूँ अढाइ सै तै बच०बे। आओर ओहि में सें जे बचत ओकर बेसी दाम मिलत। तब दिवारी में एक हरिअर सारी[६] लेब। हौं हौं हरिअर सारी हम०रा मुँह पर नीक खुलत। आओर बस, हम तै हरिअरे सारी लेब। आओर ऐंठ जैंठ कै चलैत चलैत में सैं सैं लच०कत चलब।

एहि सोच बिचार में ऊ गँवारि गोआरिनि जे किछु चमक ठमक कै टेढ़ चाल चलल तब दहेरी ओक०रा माथा पर सैं गिर कै चूर जूर हो गेलै, आओर सौं सो बनल बनाएल घर बिगर गेलै।

---

[१] एक, [२] दही का बर्तन, [३] पास, [४] है, [५] उनमें से [६] हरी साड़ी।

घ. राजस्थानी उपभाषाएँ

१२. मारवाड़ी

अजमेर

अमलाँ मैं आछा लागो, म्हारा राज !

पीवो-नी दारू-ड़ी[१] ॥

सुरज था-नै पुजस्याँ जी भर मोत्याँ-को थाल ।
घड़ेक मोड़ा[२] उगजो जी पिया जो म्हारै पास ।
पीवो-नी दारू-ड़ी ।

अमलाँ मैं आछा लागो म्हारा राज !

पीवो-नी दारू-ड़ी ॥

जा एँ दासी बाग मैं, ओर सुण राजन री[३] बात ।
कदेक[४] महल पधारसी, तो मतवालो घणराज[५] ।
पीवो-नी दारू-ड़ी ॥

अमलाँ मैं आछा लागो म्हारा राज !

पीवो-नी दारू-ड़ी ॥

थारी ओलूँ[६] म्हे कराँ, म्हारी करै न कोय ।
थारी ओलूँ म्हे कराँ, करता करै जो होय ।
पीवो-नी दारू-ड़ी ।

अमलाँ मैं आछा लागो म्हारा राज !

पीवो-नी दारू-ड़ी ॥

---

[१] हे मेरे स्वामी, नशे में तुम अच्छे लगते हो, शराब जरूर पीओ,
[२] एक घड़ी देर में, [३] राजा की, [४] कब, [५] स्वामी [६] प्रेम

१३. जयपुरी

जयपुर राज्य

एक बाँण्यू छो। रात की भगत[1] दोन्यूँ लोग लुगाई घर में सूता छा[2]। आदी रात गियाँ एक चोर आर[3] घर में बड़ गयो[4]। ऊँ भगत मैं बाँण्याँ नै नींद सूँ चेत हो ग्यो। बाँण्याँ नै चोर को ठीक पड़ग्यो[5]। जद बाँण्यूँ आपकी लुगाई नै जगाई। जद लुगाई नै[6] कई आज सेठाँ कै दसावराँ सूँ चीठ्याँ लागी छै सो राई भोत मँगी होली। तड़कै रिप्याँ बराबर बकैली। राई का पाताँ नै[7] नीकाँ जाबता सूँ मेल दे। जद लुगाई कई, राई का पाता बारली तबारी का खूणाँ में[8] पड्या छै। तड़कै ईं नीकाँ मेल देस्यूँ।

चोर आ बात सुणर मन में बचारी राई पाताँ में सूँ बाँदर[9] ले चालो। ओर चीज सूँ काँईं काम छै। जद बो चोर राई का पाताँ की पोट बाँदर ले गियो। बाँण्यूँ देखी, ओर मालसूँ बच्यो। राई लेग्यो। मालसूँ पंड छूट्यो। जद दन ऊग्याँईं बो चोर राई की झोली भरर बेचबा नै बजार में ल्यायो। तो बजार का पीसा की ढाई सेरका भावसूँ माँगी। जद चोर मन में समझी बाँण्यूँ चालाकी करर आपका घर को धन बचा लियो।

---

[1] समय, [2] सोते थे, [3] आकर, [4] घुस गया, [5] ज्ञान हो गया, [6] स्त्री से [7] बर्तनों को, [8] बाहर बरामदे के कोने में, [9] बाँध

१४. मालवी

भावुआ राज्य

एक सरवण नाम करी ने आदमी थो। वणी रा[1] मा बाप आँखा ऊँ आँदा था। सरवण वणा ने तोक्याँ[2] फरतो थो। चालताँ चालताँ आँदा आँदी ने[3] रस्ता मे तरस[4] लागी। जदी सरवण ने कीदो के बेटा, पाणी पाव। म्हाँ ने तरस लागी। जदी ऊ वणा ने[5] वठे[6] वेठाइ ने पाणी भरवा ने तलाव उपर गियो। वणी तलाव उपर राजा दशरथ की चोकी थी। जणी वखत सरवण पाणी भरवा लागो। जदी राजा दशरथे दूरा ऊँ देख्यो। तो जाण्यों के कोई हरण्यो पाणी पीवे हे। एसो जाणी ने राजा ए बाण मार्यो। जो सरवण रे छाती मे लागो। जो सरवण वणी वखत राम राम करवा लागो। जदी राजा ए जाण्यो के यो तो कोई मनख हे।

एसो जाणी ने राजा दशरथ सरवण कने गियो। तो देखे तो आपणो भाणेज[7]। राजा सोच करवा मंड्यो। जद सरवण बोल्यो, के खेर मारो मोत थाणा हात से ज लखी थी। अबे मारा मा बाप ने पाणी पावजो। अतरो केइ ने सरवण तो मरि गियो। ने[8] राजा दशरथ पाणी भरी ने बेन बेनोई[9] पावा ने आयो। जदी आँदा आँदी बोल्या के तूँ कूँण हे। दशरथ बोल्यो के थाणे काँई काम हे थें। पाणी पीयो। जदी बेन बोली में तो सरवण सिवाय दुसरा का हात को पाणी नी पीयाँ। दशरथ बोल्यो के हूँ दशरथ हूँ। ने मारा हातँ अजाण मे सरवण मरि गियो।

आँदा आँदी सरवण को मरण हुणी ने[10] हा! हा! करी ने राजा दशरथ ने हराप[11] दीदो के जणी बाणू मारो बेटो मारयो वणा ज बाणू तूँ मरजे। एसो हराप देइ ने आँदा आँदी बी मरि गिया।

---

[1] उसके, [2] लेकर, [3] अंधे अंधी को, [4] प्यासा, [5] उनका, [6] वहाँ, [7] भानजा [8] और, [9] बहिन बहिनोई को, [10] सुनकर, [11] शाप

ङ. पहाड़ी उपभाषा

१५. कुमांयूनी

अल्मोड़ा

एक समय लच्छु कोठ्यारी[1] नाम आदमी का[2] वज्र-मूर्ख सात पुत्र छिया[3]। वी का[4] मरणा[5] बाद वों[6] आपणी[7] इजा[8] कन[9] रात-दिन खाणा पिणा[10] सों[11] दिक करन छिया[12]। आखिर तंग आई[13] उनरी[14] इजा उनन कन[15] छोड़ी[16] आपणा[17] मैत[18] सों जानी रई[19]। उन कुपुत्रन[20] न खाणा-पिणा बणूणा को[21] सीप छियो[22] और न के[23] प्रकार की सहूलियत।

जब भूख ले[24] पेट में हुड़कियाँ नाचणा लगा[25], तब एतुक[26] बिसी का सैंखड़ा[27] हुर्नी[28] कै मालूम भयो[29]। सब भाइन ले[30] इजा बुलौणा की[31] राय दी पर बुलौणा सों जा को[32] ? कोई लग[33] रस्त में[34] डर का[35] कारण जाणा सों[36] राजा नी भयो[37] आपस में एक दूसरा[38] कन[39] दुख को कारण बताई[40] खूब लड़न छिया[41]। गाँव का लोग उनन[42] एक दूसरा का बिरुद्ध और लग[43] भड़काई दिछिया[44]।

अन्त में लड़ झगड़ी[45] वो[46] दुष्ट नष्ट होई गया[47]।

[श्री कृष्णानन्द जोशी द्वारा संकलित]

---

[1] लक्ष्मीदत्त कोठारी, [2] के, [3] थे, [4] उसके, [5] मरने के, [6] वे, [7] अपनी, [8] माँ, [9] को, [10] खाने पीने, [11] के लिए, [12] करते थे, [13] आकर, [14] उनकी, [15] उनको, [16] छोड़कर, [17] अपने, [18] मैके, [19] चली गई, [20] कुपुत्रों को, [21] बनाने की, [22] जानकारी थी, [23] किसी [24] से, [25] हुड़किया एक प्रकार के गा-गा कर माँगने वाले होते हैं, अर्थात् भूख अत्यन्त सताने लगी, [26] इतने, [27] बीस के सैकड़े, [28] होते हैं, [29] करके, अर्थात् वास्तविक बात मालूम हुई, [30] भाइयों ने, [31] बुलाने की, [32] कौन, [33] भी, [34] रास्ते में, [35] के लिए, [36] न हुआ, [37] दूसरे, [38] को, [39] बताकर, [40] लड़ते थे, [41] उनको, [42] भी, [43] भड़का, [44] देते थे [45] लड़ झगड़ कर, [46] वे, [47] हो गए।

१६. गढ़वाली

पौड़ी

एक राजा अर वजीरा नौना[१] मा बड़ी भारि दोस्ति छै। एक दिन दुय्या द्वी[२] जंगल मा सिकार खेन्नु तैं गैन[३]। एक मृगा पैथर[४] ऊन घोड़ा छोड़ देवे पर ऊन मृग नी छौंप सक्यों[५]। वीं दौड़ादौड़ि मा वो रस्ता भूल गिने। रिबड़ते[६] रिबड़ते वो थक गिने पर बूँ सणि[७] रस्ता नि मिल्यो। दो फरा घामै चटाक जो लगे त ऊँ सणि तीस[८] लग्गे। बड़ी देर तैं खोजणा रैने[९] पर कखी पाणी को बूंद नि मिल्यो। तब दुया द्वी एक पीफला डाला तल[१०] वैठि गिने। वजीरा नौना न बोले कि मैजि मिं[११] आपको तै जखन होलो[१२] पाणि खोज तैं लौलो[१३] अर वो तब पाणि खोजणू तैं चलोगे। राजा नौना सणि पीफल डाला तला ठंडा बथौं[१४] मा निंद ऐ गे। सिया मा वै का खुट्टा पर गुरौ न तड़ाक मार दे[१५]। वजीरौ नौनो पाणि ले के आये व देखद त राजा नौना पर सान न बाच[१६]। जपकाये[१७] जुपकाये पर वें थै होस नी आये। वे न तब राजा नौनो मुंड कोलि[१८] पर धारे और सैरा दिन उखिमु[१९] रोणू रये। स्यामलि दा[२०] महादेव पार्वति जी वीं रस्ता असमान बटि जाणा छा। पार्वति जी न जब रोणों सूणे त ऊन बोले हे महादेव जी जन्नी[२१]

---

[१] लड़कों में, [२] दोनों के दोनों, [३] गये, [४] पीछे, [५]नहीं पकड़ सके, [६] इधर उधर भटकते हुए, [७] को, [८] दोपहर की असह्य धूप लगने पर उन्हें प्यास लग गई, [९] रहे [१०] तले, [११] भाई जी मैं, [१२]जहाँ से होगा, [१३] लाऊँगा, [१४] बयार, [१५]सोते हुए में साँप ने उसके पैर को काट लिया, [१६]होश न हवास, [१७] टटोलना [१८] गोद, [१९]वहीं पर, [२०]शाम के वक्त, [२१] जैसे हो।

करदाई तैं रुँदारा[१] की विपदा मिटै द्या[२]। तब महादेव जि न एक बुढ्या वामण को रूप धारे अर वजीरा नौना मु गैने। ऊन वे मा बोले कि सुण वजीरा लड़का जु तुने का घौ[३] पर गिचौ[४] लगै की बिस स सोड़ देल्यो[५] त यो बच जालो पर तु मर जैलो भै[६]। वजीरा नौना न महादेव जी सणि वोन्न भी न द्यो अर गिचो लगै दे। महादेव जी भौत[७] खुस ह्वै ने ऊन वे को हाथ पकड़े कि ठैर जा मि त्वै से बड़ो खुश छौं[८] अर त्वै सणि वरदान देंदू कि तेरो मित्र वच जालो। इनो बोली तैं महादेव जी अन्तर्ध्यान ह्वै गिने। राजा नौनो चड़म[९] खड़ो उठे अपणा दगड़्या[१०] सणी पुछणा बैठि गे। वे न सब हाल लगाये अर तब दुय्या द्वी महादेव जी का बड़ा भक्त ह्वै कि तैं घर ऐने। खावन पिवन आनन्द खन[११]।

[श्री विशंभरदत्त भट्ट द्वारा सङ्कलित]

---

[१] रोने वाले की, [२] मिटा दीजिये [३] घाव, [४] मुँह, [५] चूस जाना, [६] मर जावेगा भाई, [७] बहुत, [८] हूँ, [९] एकदम से, [१०] दोस्त [११] रहें

Ma 11

च. पञ्जाबी उपभाषा

नाभा राज्य

इक राजे दे सत धिआँ सन[1]। इक दिन राजे ने उन्हाँनूँ आखिया[2], 'धिओ, तुसीं कीदा भाग खाँदीआँ हो ?' छीआँ नें आखिआ, 'असीं[3], बाबू, तेरा भाग खादीआँ हाँ'। ते[4] सतमी ने आखिआ 'मैं ता अपना भाग खाँदी हाँ।' ताँ राजे ने आखिआ 'मैं थोनूँ[5] किहा जिया पिआरा लगदा हाँ ?' छीआँ ने आखिया, 'तू, साँनू[6] खंडवर्गा[7] पिआरा लगदा है'। ते सतमीने आखिआ, 'तूँ मैनूँ, नून वर्गा पिआरा लगदा है।'

ताँ राजे ने हरख के[8] आखिआ, 'एहनूँ किसे लँगड़े लूले नाल[9] बिहा देओ। देखो फिर किकूँ[10] अपना भाग खाऊगी'[11]। ताँ ओह इक लँगड़े नाल बिहा दित्ती। ओह विचारी लँगड़े नूँ खारी विच[12] पाके[13] मँगदी खादी पई फिर दी। इक दिन खारीनूँ इक छप्पड़ ते[14] कंडे ते[15] धर के आप मँगन छली गई। ताँ लँगड़े ने की देखिआ कि काले काँ[16] छप्पड़ विच बड़के[17] बग्गे[18] हो हो निकल्दे आओंदे हन। ताँ ओनांदी रीसम रीसी[19] लँगड़ा बी रूढ़दा पैंदा[20] छप्पड़ विच जा डिग्गा[21]। ते ओह नौबनौं[22] हो गिआ। ताँ जद ओहदी बहू मंग तंग के आई ताँ ओह आऊँ दीनूँ[23] राजी बाजी हो के खड़ गिया[24]।

---

[1] एक राजा के सात लड़की थीं, [2] कहा, [3] हम, [4] और, [5] तुम्हें, [6] हमको, [7] शक्कर की तरह, [8] क्रुद्ध होकर, [9] साथ, [10] कैसे, [11] खायेगी [12] टोकरी में, [13] रख कर, [14] तालाब के, [15] किनारे, [16] काले कौवे, [17] घुस कर, [18] सफेद, [19] उनकी नकल करके, [20] लुढ़कता पुढ़कता, [21] गिरा, [22] अच्छा, [23] आकर, [24] खड़ा हो गया।

परिशिष्ट

साहित्यिक खड़ी बोली

(क) साहित्यिक उर्दू : क्लिष्ट

यह ग़रीबुद्दयारे अहद[1] व नाआश्नाए अस्र[2] बेगानए खेश[3] व नमक परवर्दए रेश[4] मामूरए तमन्ना[5] व ख़राबए हसरत[6] कि मौसूम[7] ब अहमद व मदऊ[8] बे अबुल्कलाम है सन् १८८८ ईस्वी मुताबिक़ जुलहिज्जा सन् १३०५ हिज्री में हस्तिए अदम[9] से इस अदमें हस्ती-नुमा[10] में वारिद हुआ[11] और तुहमते हयात से मुत्तहम[12]।

अब क़दम की तेज़ी और हिम्मत की चुस्ती वापस भी मिल जाय फिर भी वह दौलते वक्त कब वापस मिल सकती है जो लुट चुकी और वह क़ाफ़िलए उम्मीद वतन[13] पसमाँदगाने ग़फ़लत[14] की ख़ातिर लौट सकता है जो जा चुका ?

सुभान अल्लाह,[15] बख़्त की फ़ीरोज़ी[16] और तालेअ की अर्जुमंदी[17] नीमए उम्र[18] लग्ज़िशों[19] और ठोकरों की पामाली[20] व दरमाँदगी[21] में बसर हो चुकी नीमे उम्र जो शायद बाक़ी है दम लेने व सुस्ताने में

---

[1] समय रूपी देश का पथिक, [2] संसार में अपरिचित, [3] नातेदारों में विदेशी, [4] घावों का पाला हुआ, [5] लालसाओं का नगर, [6] निराशाओं का मरुस्थल, [7] नामक, [8] ज्ञात, [9] अस्तित्वहीन संसार, [10] प्राकृतिक संसार जो वास्तव में अस्तित्वहीन है, [11] प्रवेश किया, [12] जीवन के दोष से दूषित [13] ऐसे यात्रियों का समूह, जो घर पहुँचने की आशा में चला जा रहा हो, [14] आलस्य के रोगियों, [15] धन्य ईश्वर, [16] भाग्य की सिद्धि, [17] भाग्य का बड़प्पन, [18] अर्द्ध आयु, [19] फिसलना अथवा दुष्कर्म, [20] कुचलना, [21] थकावट या बीमारी या व्यथा,

खतम हो रही है। न मंज़िले मक़सूद[1] का पता है न शाहराहे मंज़िल[2] पर क़दम। जब पाँव में तेज़ी और हिम्मत में जवानी थी तो रहनवर्दी[3] व मंज़िल-तलबी[4] का दरवाजा न खुला। अब पामालियों और उफ़्तादगियों[5] से न क़दम में पामर्दी[6] रही न हिम्मत में कारफ़र्माई[7] तो तलब[8] ने आँखें खोलीं और ग़फ़लत ने करवट ली। राह दूर और निशाने मंज़िल[9] गुम। कीसए ज़ाद[10] खाली और सरो सामाने कार[11] नापैद। वक़्त जा चुका और हर आन वा हर लम्हा[12] कारवाने मक़सूद[13] से दूरी और मंज़िले मुराद[14] से महजूरी[15] बढ़ती गई।

[मौलाना अबुल्कलाम आज़ाद, 'तज़किरा']

(ख) साहित्यिक उर्दू : साधारण

बेगम ने देखा होगा दिल्ली शहर में एक जामा मसजिद है जिसको हमारे दादा शाहजहाँ ने बनाया था। दूर दूर की ख़िलक़त[16] उसको देखने आती है मगर इसको कोई नहीं देखता कि मस्जिद की सीढ़ियों के सामने फटे हुए बुर्क़ा के अंदर नातवां[17] बच्चे को गोद में लिये पेवंद लगा पाजामा और गठी हुई कन्ने[18] लगी जूती पहिने कौन औरत भीख मांगती है। बेगम! यह ग़रीब दुखिया शाहज़ादी है जिसका कोई वारिस[19] नहीं रहा। तुम यकीन करना मेरी रहमदिल वाइसरानी, उसी के बाप शाहजहां ने यह मस्जिद बनवाई थी। आज

---

[1] उद्देश्य, [2] वह पथ जो उद्देश्य तक मनुष्य को पहुँचाता है [3] भ्रमण करना, [4] उद्देश्य की पूर्ति का विचार, [5] सांसारिक क्लेश, [6] बल, [7] विचार शक्ति, [8] इच्छा अथवा उद्देश्य की पूर्ति का विचार, [9] उद्देश्य का ठिकाना, [10] वह थैली जिसमें यात्रा की सब सामग्री होती है, [11] कार्य्य की सामग्री [12] प्रत्येक पल, [13] ध्येय की ओर जाने वाला कारवाँ, [14] ध्येय, [15] वियोग [16] जनता, [17] दुर्बल, [18] किनारों पर ज़री का काम की हुई, [19] नातेदार,

पेट के लिये भीख के टुकड़े जमा कर रही है ताकि ज़िन्दगी की मस्जिद आबाद करे[1]।

मुझे शर्म आती है मैं तुमसे क्योंकर कहूँ कि यह हज़ार रुपये बहुत थोड़े हैं। मरहम के एक छोटे से फाया से क्या होगा। हमारे तो सारे बदन पर ज़ख्म हैं। तुम्हारी नई दिल्ली की खैर[2] जिसकी सड़कों में लाखों रुपया ख़र्च हो रहा है। तुम्हारी नई इमारतों की ख़ैर जिनके वास्ते करोड़ों रुपयों की मंजूरी है। तुम्हारे इस नेक ख़्याल की ख़ैर जिसकी बदौलत दिल्ली की पुरानी इमारतों की मरम्मत हो रही है और बेशुमार रुपया इसमें खर्च किया जा रहा है। हमारे पेट की नामुराद[3] सड़कों की भी मरम्मत हो, और हमारे टूटे हुये दिलों पर भी इमारतें चुनवाओ। हम भी पुराने ज़माने की निशानियाँ हैं। हमको भी जिन्दा आसार क़दीम[4] में लोग समझते हैं। हमको भी सहारा दो। मिटने से बचाओ। खुदा तुमको सहारा देगा और बचायेगा।

[ख़्वाजा हसन निज़ामी, 'बेगमात के आँसू']

(ग) बेगमाती उर्दू : लखनऊ

अम्मी जान, खुदा करे आप सलामत रहें। बहिन झम्मन साहिब आज लखनऊ में दाखिल हुईं उनसे आपकी सब खैर-ओ-सलाह मालूम हुई। बड़े मामू का जी आये दिन[5] माँदा रहता है। लख़नऊ में बहुत दवा-दर्मन की मगर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। कल्ह अगर ऊपर वाला हो गया[6] तो जुमारात[7] को वह जरूर इलाज करने फैजाबाद सिधारेंगे।

आज कल्ह यहाँ चोरों का बड़ा नर्गा[8] है। पड़ोस में खानम

---

[1]अपने पेट को पाले, [2] इस शब्द का मुसलमान भिखारी बहुत प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ है 'भला हो', [3] असंतुष्ट, [4] भूतकाल [5] नित्यप्रति, [6] चाँद देख पड़ गया, [7] बृहस्पतिवार को, [8] झुंड

साहिब के यहाँ कल्ह दिन दहाड़े कई चोर घुस आये। बड़ा गुल गपाड़ा मचा। सिपाही निगोड़े गंवार के लठ, समझे न बूझे। हुल्लड़ सुन्ते ही हमारे मकान में दर्रान चले आये। वह तो कहिये बड़ी खैरियत गुज़री। आदमी ड्योढ़ी पर मौजूद था, उसने रोका थामा, नहीं तो सब का सामना हो जाता। उसमें से दो चोर पकड़े भी गये। मुओं ने हाकिम के सामने उल्टा छुड्डा[1] रक्खा कि खानम साहिब के बेटे ने मकान ऋकवाने के बहाने से घर में बुलाया। दोपहर बन्द रक्खा, पचास रुपैय्ये छीन लिये, उल्टा चोर चोर करके गुल मचा दिया।

नज़ीर और उन्की बीबी में रोज़-मर्रा झंझट हुआ करती है। नज़ीर को तो जानिये आप एक नक चढ़ा, बीबी भी मिज़ाजदार, ज़रा ज़रा सी बात पर तू तू मैं मैं होने लगती है। लाख समझाया "बहिन, कच्चा साथ है। .खुदा रक्खे, सियानी लड़की बियाहने लायक़ पहलू से लगी बैठी है। उसके सामने इस बकबक झकझक, दिन रात के दाँत किल-किल से क्या फ़ायदा"। मगर ऐसी अक्लों पर खुदा की मार। समझाने में बात के बतंगड़ बढ़ते हैं। कौन दख़ल दे। उल्टा नक्कू बने।

औलाद अली को देखिये। न कोई बात न चीत। बेकार बेकार भी माँ से लड़भिड़ कर दधियाल चला गया।

बेगम जान का छ महीने का पालापोसा बच्चा परसों जाता रहा। बेचारी एक आँख दबाती है लाख आँसू गिरते हैं। अभी मियाँ को मरे पूरे चार महीने भी नहीं हुये थे कि यह आस्मान फट पड़ा। ग़रीब की रही सही आस भी टूट गई।

(घ) साहित्यिक हिन्दी : क्लिष्ट

कविता वास्तव में हृदय का उच्छ्वास, अथवा आनन्दांगुलि विलोड़ित हृत्तंत्री के मधुर नाद का शाब्दिक विकास है। यह स्वाभा-

---

१—इल्ज़ाम

सकता है कि जिस समय मनुष्य के हृदय में आनन्द-उद्रेक होता है उस समय अनेक अवस्थाओं में केवल वह कण्ठध्वनि द्वारा ही उस आनन्द का प्रदर्शन करता है। किसी किसी अवस्था में उसके मुख से कुछ निरर्थक शब्द निकलते हैं और वह उन्हीं के द्वारा अपने हृदयोल्लास की परितृप्ति करता है। कभी वह सार्थक शब्दों को कहने लगता है और इनको इस प्रकार मिलाता है कि उसमें गति उत्पन्न हो जाती है और वे छन्द का स्वरूप धारण कर लेते हैं। बालकों को, उन बालकों को जो खेल कूद में मग्न अथवा उछल कूद में तल्लीन होते हैं हम इस प्रकार का वाक्य-विन्यास करते देखते हैं जिनका स्वरूप सर्वथा कविता का सा होता है। उसमें शब्दानुप्रास और अन्त्यानुप्रास तक पाया जाता है। गोचारण के समय हृदय पर सामयिक ऋतुपरिवर्तन-जनित विकासों, तरुपल्लव के सौंदर्यों, खगकुल के कलित कलोलों, श्यामल तृणावरण शोभित-प्रान्तरों, कुसुमचय के मुग्धकर माधुर्य और वर्षाकालीन जलदजाल का लावण्य देख कर मूर्खों के मुख से भी आमोद सिक्त ऐसे वाक्य सुने जाते हैं जो स्वाभाविक होने पर भी हृदय हरण करते हैं और जिनमें एक प्रकार का संगठन होता है। ऐसे अवसरों पर किसी सुबोध विद्वान अथवा भावुक के हृदय से जो इस प्रकार के वाक्य निकलेंगे तो अवश्य वे सुन्दर सुगठित और अधिक मनोहर होंगे, यह निश्चित है। छन्दों अथवा कविता का आदिम सूत्रपात इसी प्रकार से हुआ ज्ञात होता है।

(पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'बोलचाल']

(ङ) साहित्यिक हिन्दी : साधारण

कूप-मण्डूक भारत, तुम कब तक अन्धकार में पड़े रहोगे। प्रकाश में आने के लिये तुम्हारे हृदय में क्या कभी सदिच्छा ही नही जागृत होती? पक्षहीन पक्षी की तरह क्यों तुम्हें अपने पींजड़े से बाहर निकलने का साहस नहीं होता? क्या तुम्हें अपने पुराने दिनों की कभी

याद नहीं आती ? किन दिनों की, जानते हो? उन दिनों की जब तुम्हारे जहाज़ फ़ारिस की खाड़ी और अरब के सागर में चलते थे और जब अरब तुम्हारे व्यवसाय-निपुण निवासियों ने, सहस्त्रों की संख्या में, मिस्त्र, ईरान, और यूनान के बड़े बड़े नगरों में कोठियाँ खोल रक्खी थीं। उन दिनों की जब ब्रह्मदेश, श्याम, अनाम और कम्बोडिया ही में नहीं, मलय-प्रायद्वीप के जावा और बाली आदि टापुओं तक में तुम्हारा गमनागमन था और जब तुमने उन दूरवर्ती देशों और द्वीपों में भी अपने उपनिवेश स्थापित किये थे। उन दिनों की जब तुम्हारे बौद्ध भिक्षु और अन्य विद्वज्जन गान्धार, तुर्किस्तान और चीन तक के निवासियों को अपने धर्म्म, अपनी विद्या और अपने विज्ञान का दान देने के लिए वहाँ तक पहुँचे थे। उन दिनों की जब खोस्त और यारकन्द के समीपवर्ती अगम्य प्रदेशों में भी तुम्हारे धर्म्माचार्य्यों ने बड़े बड़े मठों, मन्दिरों, स्तूपों और चैत्यों की स्थापना की थी।

[पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, 'समालोचना समुच्चय']

(च) साहित्यिक हिन्दी :

हिन्दुस्तानी के निकट

नागरी लिपि में छपी हुई पुस्तकों और समाचार पत्रों की भाषा—चाहे आप उसे साहित्य की हिन्दी कहिए, चाहे कुछ और—फ़ारसी लिपि में छपी हुई पुस्तकों और समाचार पत्रों की भाषा से बिल्कुल जुदा है। इस भेदभाव को जानबूझ कर न देखने या उस पर खाक डालने से काम नहीं चल सकता। ऐसा करना फ़िजूल है। अतएव यह बहुत जरूरी है कि डाक्टर सुन्दरलाल की सम्मति के अनुसार रीडरों में परिवर्तन किया जाय। यदि ऐसा न किया जायगा तो जो लड़के चौथा दरजा पास करके मिडिल स्कूलों के पाँचवें दरजे में भर्ती

होंगे उनकी पढ़ाई में थोड़ी बहुत बाधा जरूर आवेगी। यहाँ मतलब उन लड़कों से है जिनकी शिक्षा अपर प्राइमरी दरजों में नागरीलिपि के द्वारा हुई होगी। जो लड़के चौथे ही दरजे से मदरसा छोड़ देंगे वे यदि मदरसा छोड़ने पर छोटी मोटी किताबें और अखबार भी न समझ सकें तो उनकी शिक्षा से उन्हें बहुत ही कम लाभ हुआ समझिए। जो लोग प्राइमरी मदरसों में भाषा संबंधी एकाकार करने के सबसे बड़े पक्षपाती हैं वे भी, आशा है, इस बात को स्वीकार करेंगे। पिगट साहब की राय का सारांश यही है।

[पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी. 'समालोचना समुच्चय']

(छ) साहित्यिक हिन्दुस्तानी

सन् १८६७ ई० के गदर में खास करके सिपाही लोग शरीक हुए थे। कहीं-कहीं, जैसे अवध में, आम लोग भी शरीक हुए थे। उन्हें डर इस बात का था कि अंग्रेजी सरकार उनकी जाति नाश करने की कोशिश कर रही है। उनका मतलब यह कभी न था कि वे अंग्रेजों से इस देश को जीत लेवें और अपनी रियासत कायम करें। फिर उनको नाखुश और बेचैन देख कर दिल्ली के बादशाह, नाना साहब, अवध की बेगम, रानी लक्ष्मीबाई आदि अपना अपना मतलब हासिल करने के लिए उनके मुखिया बन गये। अगर ये लोग सिपाहियों की मदद न करते तो मुमकिन था कि बलवा इतना जोर कभी न बाँधता। अस्तु, अब सिपाहियों के जो लोग मुरब्बी व मुखिया बनकर लड़े थे उनकी ओर थोड़ी देर के लिए अपनी नजर फेरो। इनकी हार होने की खास वजह यह थी कि उन सब में मेल न था। वे सब के सब खुदगर्ज थे और अपना मतलब साधने की कोशिश कर रहे थे। देश के लिए या देश की भलाई करने के लिए वे नहीं लड़ते थे। उधर बहादुरशाह अकबर के ऐसा एक ज़बरदस्त सम्राट् बनना चाहता था।

उधर नाना साहब बाजीराव की बराबरी करना चाहता था। फिर अवध की बेगम और झाँसी की रानी स्वतंत्र बनना चाहती थीं। फिर उन दिनों हिन्दू मुसलमान को और मुसल्मान हिन्दू को नहीं चाहते थे। ऐसी हालत में जहाँ मतलबी लोग अपनी अपनी बढ़ती चाहते हैं और भाई भाई को प्यार नहीं करते, तब देश स्वतंत्र कैसे बन सकता है?

[मन्मथनाथ राय, 'भारतवर्ष का इतिहास']

हिंदी की मुख्य-मुख्य बोलियों के व्याकरणों की तालिकाएँ

संज्ञाओं में रूपान्तर

पुल्लिंग-आकारान्त तद्भव

	हिंदी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
मूल रूप एकवचन	(घोड़ा)	(घोड्डा)	(घोड़ा)
,, बहुवचन	—ए (घोड़े)	—ए (घोड्डे)	(घोड़ा)
विकृत रूप एकवचन	—ए (घोड़े)	—ए (घोड्डे)	(घोड़ा)
,, बहुवचन	—ओं (घोड़ों)	—ओं (घोड्डों)	—अन (घोड़न)

अन्य

मूल रूप एकवचन	(आम)	(आँव)	(आम)
,, बहुवचन	(आम)	(आँव)	(आम)
विकृत रूप एकवचन	(आम)	(आँव)	(आम)
,, बहुवचन	—ओं (आमों)	— (आँव्वों)	—अन (आमन)

पुल्लिंग-आकारान्त तद्भव

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूल रूप एकवचन	(घोड़वा)	(घोड़वा)	(घोड़ा, घोड़वा)
,, बहुवचन	—ए (घोड़वे)	—मन (घोड़वामन)	(घोड़ा, घोड़वा)
विकृत रूप एकवचन	(घोड़वा)	(घोड़वा)	(घोड़ा, घोड़वा)
,, बहुवचन	—उन (घोड़उन)	—मन (घोड़ामन)	—वन (घोड़न, घोड़वन)

मूल रूप एकवचन	(आँब)	(गर, हि० गला)	(आम)
” बहुवचन	(आँब)	—मन (गरमन)	(आम)
विकृत रूप एकवचन	(आँब, आँबे)		(आम)
” बहुवचन	—अन(आँबन)	—मन (गरमन)	—अन्हि (आम, आमन्हि)

स्त्रीलिंग-ईकारान्त

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
मूल रूप एकवचन	(लड़की)	(लौंडी)	(रोटी)
” बहुवचन	—इयाँ (लड़कियाँ)	—इयाँ (लौंडियाँ)	(रोटी)
वि० रूप एकवचन	(लड़की)	(लौंडी)	(रोटी)
” बहुवचन	—इयों (लड़कियों)	—इयों (लौंडियों)	—इन (रोटिन)

अन्य

मूल रूप एकवचन	(ईंट)	(ईट)	(ईंट)
” बहुवचन	—एँ (ईंटें)	—एँ (ईटें)	(ईंट)
वि० रूप एकवचन	(ईंट)	(ईट)	(ईंट)
” बहुवचन	—ओं (ईंटों)	—ओं (ईटों)	—अन (ईंटन)

स्त्रीलिंग ईकारान्त

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूल रूप एकवचन	(रोटी)	(छेरी)	(रोटी)
,, बहुवचन	(रोटी)	[मन] (छेरी)	(रोटी)
वि० रूप एकवचन	(रोटी)	(छेरी)	(रोटी)
,, बहुवचन	(रोटिन)	[मन] (छेरी)	(रोटिन)

अन्य

मूल रूप एकवचन	(ईंट)	(जिनिस)	(ईंट)
,, बहुवचन	(ईंट)	[मन] (जिनिस)	(ईंट)
वि० रूप एकवचन	(ईंट)	(जिनिस)	(ईंट)
,, बहुवचन	(ईंट)	[मन] (जिनिस)	—अन्हि (ईंटन्हि)

सर्वनाम

उत्तमपुरुष

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	व्रजभाषा
मूलरूप एकवचन	मैं	मैं, म	मैं; हौं
,, बहुवचन	हम	हम	हम
विकृतरूप एकवचन	मुझ	मुज; मेरे	मो (चतुर्थी: मोय)
,, बहुवचन	हम	हम, म्हारे	हम (चतुर्थी: हमैं)
संबंध एकवचन	मेरा	मेरा; म्हारा	मेरो
,, बहुवचन	हमारा	हमारा; म्हारा	हमारो

उत्तम पुरुष

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूलरूप एकवचन	मइ	में, मैं	में, हम
,, बहुवचन	हम	हम, हम-मन	हम-नी का, हम-रन
विकृतरूप एकवचन	मइ	मो, मोर	मोहि, मो, हमरा
,, बहुवचन	हम	हम, हमार	हम-रा
संबंध एकवचन	मोर	मोर	मोर, मोरे, हमार हम-रे
,, बहुवचन	हमार	हमार	हम-नी, हम रन

मध्यम पुरुष

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	व्रजभाषा
मूलरूप एकवचन	तू	तू	तू
,, बहुवचन	तुम	तुम; तम	तुम
विकृतरूप-एकवचन	तुझ	तुज	तो (च० तोय)
,, बहुवचन	तुम	तुम	तुम (च० तुमैं)
संबंध एकवचन	तेरा	तेरा, थारा	तेरो
,, बहुवचन	तुम्हारा	तुमारा; थारा	तुमारो, तिहारो

मध्यम पुरुष

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूलरूप एकवचन	तुइ	तैं, तैं	तूँ, तें
,, बहुवचन	तुम, तूँ	तुम, तुम मन	तोह-नी का, तोहरन
विकृतरूप एकवचन	तुइ	तो, तोर	तोहि, तो, तोह-रा
,, बहुवचन	तुम	तुम्ह, तुम्हार	तोह-नी, तोह-रन
संबंध बहुवचन	तोर, तोहार	तोर	तोर, तोरे, तोहार, तोहरे
,, बहुवचन	तुम्हार	तुम्हार	तोहार, तोर

प्रथम पुरुष

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी-बोली	ब्रजभाषा
मूलरूप एकवचन	वह	वो	बु; बौ
,, बहुवचन	वे	वे	वे
विकृतरूप एकवचन	उस	उस	बा (च० बाय)
,, बहुवचन	उन	उन; विन	बिन (च० बिनैं)
	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूलरूप एकवचन	ऊ, वा	उओ	ऊ, ओ
,, बहुवचन	उइ, वइ	उन, ऊओ-मन	ऊ सभ, उन्ह-का
विकृतरूप एकवचन	उइ	उओ, उओ-कर	ओहि, ओह, ओ
,, बहुवचन	उन	उन, उन्ह	उन्हु-का, उन्हु-करा

क्रिया के मुख्यरूप तथा कालरचना

मुख्यरूप

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
क्रियार्थक संज्ञा	चल-ना	चलना	चलिबो
वर्तमान कृदंत कर्तरि	चल-ता	चलै	चल्तु
भूत कृदंत कर्मणि	चल्-आ	चला	चल्यो

कालरचना

प्रथमपुरुष एकवचन			
वर्तमान काल	चलता है	चलै है	चल्तु ऐ (है)
भूतकाल	चलता था	चलै था	चल्तु ओ (हो)
भविष्यकाल	चलेगा	चलैगा	चलैगो

मुख्यरूप

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
क्रियार्थक संज्ञा	देखब	देखब	देखल
वर्तमान कृदन्त कर्तरि	देखत, देखति	देखत, देख-ते	देखत, देखित
भत कृदन्त कर्मणि	देखा	देखे	देख-ल, देख-लस

कालरचना

प्रथमपुरुष एकवचन			
वर्तमान काल	देखत अहै	देखत हवै	देखत-वा, देख-ता
भूतकाल	देखत रहइ	देखे रहिस	देखत रहे
भविष्यकाल	देखी, देखिहै	देख-ही, देखिहै	देखी

सहायक क्रिया

वर्तमान काल

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
प्रथम पुरुष एकवचन	है	है	है
„ बहुवचन	हैं	हैं	हैं
म० पु० एकवचन	है,	है	है
„ बहुवचन	हो	हो	हो
उ० पु० एकवचन	हूँ	हूँ	हौं
„ बहुवचन	हैं	हैं	हैं